नेहरू बाल पुस्तकालय

चाय की कहानी

लेखक

अरूप कुमार दत्त

चित्रकार

मृणाल मित्र

अनुवादक

एम.एल. गुप्ता
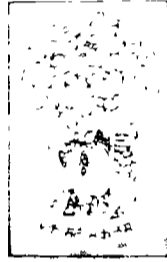
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
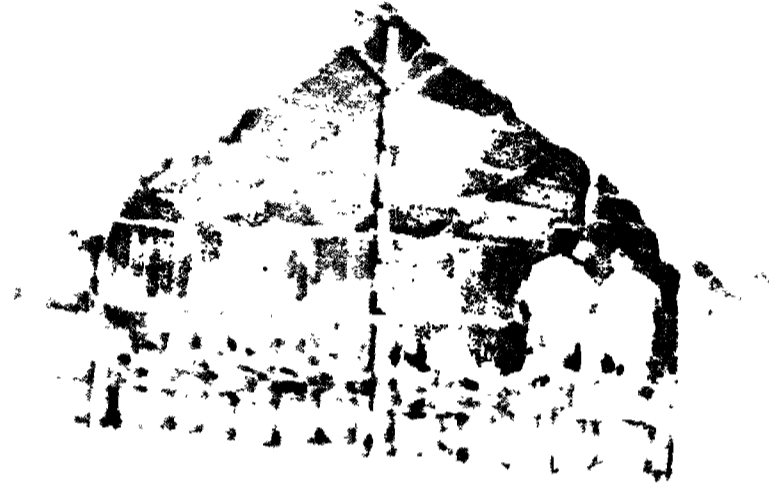
पहला संस्करण 1986 (शक 1908)
चौथी आवृत्ति 1989 (शक 1911)

A Story About Tea (*Hindi*)

रु. 5.50

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित।

अध्याय 1

छुक! छुक! करती हुई छोटी लाइन की वह गाड़ी एक छोटे स्टेशन पर रुकी। ड्राइवर के द्वारा झटके से ब्रेक लगाने से राजवीर की नींद खुल गई। 13 वर्षीय सिख किशोर राजवीर अपने दोस्त प्रांजल के साथ असम की यात्रा कर रहा था। प्रांजल खिड़की के पास बैठा एक जासूसी कहानी पढ़ रहा है। वह असम का रहने वाला है। उसके पिता असम में एक चाय बागान में मैनेजर हैं। राजवीर और प्रांजल दिल्ली में साथ साथ पढ़ते हैं और गर्मियों की छुट्टियों में प्रांजल के आमंत्रण पर राजवीर भी असम भ्रमण कर रहा है। जब राजवीर को प्रांजल ने असम घूमने का निमंत्रण दिया तो उसने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया।

दिल्ली से असम की इस लंबी यात्रा में एक दिन-रात लग जाते हैं। इस यात्रा के दौरान उन्हें अनेक सुंदर दृश्य दिखाई दिए। अब वे थोड़ी देर बाद घर पहुंचने वाले थे।

''ओ सोने वाले! जाग जरा!'' प्रांजल ने लगभग गाते हुए राजवीर को उठा दिया। ''हम लोग अगले स्टेशन मरियानी उतरने वाले हैं। अच्छा, चाय पीओगे, सुस्ती भाग जाएगी। मालूम है, चाय में काफीन होती है।''

''बस में एक मिनट में तैयार होता हूं'' बिस्तर से लगभग उछलते हुए राजवीर ने कहा। उसने जल्दी बिस्तर लपेटा, कपड़े बदले, हाथ मुँह धोया और सामने खिड़की पर प्रांजल के सामने आ बैठा।

''चाइय गरम-गरम चाइय।'' ऊंची आवाज में आवाज लगाता एक लड़का खिड़की के सामने से गुजरा।

''चाय साब।''

"दा कप चाय देना" प्रांजल ने कहा।

वे चाय की चुस्की लेने लगे। चाय गर्म थी और अनेक यात्री डिब्बे में बैठे बैठे चाय पी रहे थे।

"मालूम है विश्व में प्रतिदिन 8,00,000,000 कप चाय पी जाती है।" राजवीर ने कहा।

"हूं।" प्रांजल ने चाय का घूंट पीते हुए आश्चर्य व्यक्त किया। "चाय सचमुच में इतनी लोकप्रिय है।"

रेल फिर से झटका देकर रेंगने लगी थी और अब चाल पकड़ रही थी। प्रांजल फिर कहानी पढ़ने में खो गया। राजवीर भी जासूसी कहानियों का कीड़ा था किन्तु इस समय उसका मन बाहर की मनोहारी दृश्यावली देखने के लिए आतुर था।

हर तरफ हरियाली ही हरियाली। फिर शुरु हो गए हरे भरे धान के खेत-फिर आए चाय के बागान।

सचमुच वह बहुत भव्य दृश्य था। जहां तक दृष्टि डाली सभी जगह चाय-पत्तियों का मानो समुद्र उमड़ पड़ा हो। उनके प्रहरी बने वृक्षों से आच्छादित हैं पर्वत मालाएं। ऊंचे छाया वाले

वृक्षों के आगे चाय के छोटे पौधे बौने लगते थे। झाड़ियों की कतारों के बीच ये वृक्ष पतले नजर आते थे। उनसे जरा हट कर एक कच्चा टूटा फूटा मकान था जिसकी चिमनी से धुंआ निकल रहा था।

"वो देखो। चाय बागान।" राजवीर उत्तेजना से चिल्ला उठा।

प्रांजल ने एक बार उस ओर देखा और पढ़ने में खो गया। उसका जन्म इन्हीं बागानों के बीच हुआ था और इन दृश्यों से उसका पुराना परिचय था। इस कारण उसने राजवीर की उत्तेजना का कोई जवाब नहीं दिया।

"ओह। अब तो तुम चाय के देश में आ गए हो।" उसने कहा, "असम विश्व में चाय बागानों का सबसे बड़ा केन्द्र है, यहां तुम्हे इतने चाय बागान देखने को मिलेंगे कि उन्हें तुम जिंदगी भर नहीं भूल पाओगे।"

"मैं भी चाय के बारे में बहुत पढ़ता रहता हूं।" राजवीर ने बताया "किन्तु कोई भी नहीं जानता कि चाय की खोज किसने की। वैसे इस बारे में कई कथाएं सुनी हैं।"

"कैसी कथाएं।"

"एक कथा है कि चीन का सम्राट सदैव पानी उबाल कर पीता था। एक बार उबलते पानी में कुछ पत्तियां गिर गई। इंससे उसे पानी का स्वाद अच्छा लगा। ऐसा कहा जाता है वे चाय की पत्तियां थीं।"

"अच्छा, दूसरी कथा सुनाओ". . .प्रांजल ने कौतूहल से भर कर पूछा।

"यह एक भारतीय कथा है।" राजवीर कहने लगा "बोधि धर्म नामक एक प्राचीन बौद्ध संत को अपनी तपस्या के समय बार बार नींद आ जाती थी। तंग आकर उसने अपनी पलकें काट कर फेंक दीं। जहां जहां पर वे पलकें गिरीं वहां पौधे उग गए और उनकी पत्तियों को गर्म पानी में उबाल कर उसने उसका रस पिया तो नींद कोसों दूर भाग गई। वह चाय थी।"

"चाय सबसे पहले चीन में पी गई", राजवीर ने बात आगे बढ़ाते हुए बताया "ईसा से लगभग 2700 वर्ष पहले से चाय पी जा रही है। वास्तव में चाय और चीनी शब्द चीनी भाषा से लिए गए हैं। यूरोप वालों को तो चाय की जानकारी सोलहवीं शताब्दी में हुई। उस समय वे चाय को दवा के रूप में पीते थे न कि पेय के रूप में।"

रेलगाड़ी मरियानी जंक्शन के प्लेट फार्म को छूने लगी थी। लड़कों ने अपना सामान समेटना शुरु कर दिया और उसे दरवाजे के पास ले आए।

प्लेटफार्म पर बहुत भीड़ थी। प्रांजल के माता-पिता, बहन अलका और उनका पालतू अलसेशियन कुत्ता टीपू उसका इंतजार कर रहे थे। प्रांजल ने राजवीर को अपने माता-पिता और बहन से मिलाया। थोड़ी देर बाद उनकी कार ढेकियाबारी चाय बागान की तरफ दौड़ रही थी जहां प्रांजल के पिता, मि. बरुआ मैनेजर थे।

एक घंटे बाद उनकी कार मुख्य सड़क छोड़ कर और पुलिया पार कर ढेकियाबारी चाय बागान में प्रवेश कर गई।

कंकरीली सड़क के दोनों और सैकड़ों एकड़ जमीन पर चाय के पौधे एक ही ऊंचाई के छंटे हुए खड़े थे। चाय पत्तो तोड़ने वाली औरतें अपनी पीठ पर बांस की टोकरी और सामने की तरफ सिन्थेटिक के कपड़े पहने हुई नई कोमल पत्तियों को चुन चुंन कर तोड़ रही थीं।

सामने से चाय पत्तियों से भरी ट्राली लेकर एक ट्रेक्टर चला आ रहा था। प्रांजल के पिता ने उसे साइड देने के लिए कार धीमी करके सड़क के किनारे लगा दी।

"यह दूसरी बार छंटाई या चुनने का समय है, है न मि. बरुआ।". . . .राजवीर ने पूछा, "मेरे ख्याल से सबसे अच्छी चाय की पैदावार मई से जुलाई के बीच ही की जाती है।"

"अच्छा। लगता है यहां आने के पहले तुमने चाय के बारे में काफी जानकारी प्राप्त कर ली है।" प्रांजल के पिता ने आश्चर्य मिश्रित स्वर में कहा।

"जी हां, मि. बरुआ।" राजवीर ने स्वीकार करते हुए कहा। "किंतु मैं अभी यहां बहुत कुछ जानना चाहता हूँ।"

"ये तुमने मि. बरुआ-मि. बरुआ क्या लगा रखा है, मुझे अंकल कहो। मैं तुम्हें दोपहर में चाय बागान ले चलूंगा और दिखाऊंगा कि चाय कैसे पैदा होती है।"

कार मैनेजर के बंगले के गेट से अंदर घुसी। बंगले की दो मंज़िली इमारत लगभग पचास साल पुरानी थी। उसे किसी अंग्रेज चाय बागान मालिक ने बनवाया था। बांसों की एक बाड़ के साथ साथ झाड़ी लगाई गई थी जिसे बड़े करीने से छांटा गया था। उससे कंपाउंड के चारों तरफ एक बड़ा घर बन गया था। सामने की तरफ जो लान था, ऐसा लगता था मानो एक हरा कालीन बिछा दिया गया हो और बाग में लाल, नीले, पीले फूलों की तो बहार छाई हुई थी।

सामने बरामदे में उनकी ही उम्र का एक मोटा लड़का सीढ़ियों पर बैठा हुआ था। वह कमीज और निकर पहने हुए था। उसने जैसे ही प्रांजल को देखा उसके चेहरे पर खुशी की

चमक दिखाई दी। उसके दांत स्पष्ट चमक रहे थे।

"कैसे हो मंगला" प्रांजल ने जोर से आवाज दी। "आओ देखो मेरा दोस्त राजवीर आया है।"

मंगला दौड़ता हुआ आया, उसने राजवीर को बड़े गौर से देखा और उससे हाथ मिलाया।

"यह बिरची का लड़का है, हमारे कारखाने के चौकीदार का नाम बिरची है। मंगला और मैंने बहुत मजे किए हैं। और मछली के शिकार के बारे में ऐसी कौन सी बात है जो इसे मालूम नहीं है।"

"अच्छा अब चलूंगा" मंगला ने कहा–"मैं आजकल दवा छिड़कने वाले दल के साथ काम पर हूं, तुमसे मिलने चला आया था। यदि सरदार को मालूम हो गया तो मुझे कच्चा चबा जाएगा।"

मंगला ने हंसते हुए अभिवादन किया और वहां से भाग खड़ा हुआ।

अध्याय 2

दोपहर में मि. बरुआ राजवीर को चाय बागान दिखाने ले गए। प्रांजल, अलका और टीपू भी उनके साथ थे।

ढेकियाबारी 800 एकड़ में फैला हुआ एक विशाल चाय बागान था। इसलिए वे लोग मि. बरुआ की जीप में चल पड़े।

"शुरुआत क्लोन नर्सरी से करें तो बेहतर रहेगा। वहां चाय की कलमें हैं," मि. बरुआ ने सुझाव दिया।

मि. बरुआ ने बताया कि चाय के पौधों की बहुत देखभाल करनी पड़ती है। खाद, जैसे नाइट्रोजन, पोटाश और फास्फेट समय समय पर जमीन में डाले जाते हैं जिससे कि चाय के पौधों की बाढ़ स्वस्थ रहे और पौधे अच्छे हों।

"इनमें नाइट्रोजन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। चाय के पौधों में, अन्य पौधों के समान फल नहीं होते बल्कि उनकी पत्तियां तोड़ी जाती हैं। पत्तियां पौधों की पोषक होती हैं अतः पोधों की उपज के लिए यह आवश्यक है कि लगातार नाइट्रोजन दी जाए।"

"ये पौधे कभी कभी बीमार भी पड़ जाते हैं" मि. बरुआ ने बताया "शायद तुम्हें मालूम हो कि इन्हें बीमारियां भी होती हैं जैसे दीमक लगना, चित्ती पड़ जाना, और काले धब्बे पड़ना। उस समय हमें उनकी डाक्टरी करनी पड़ती है, बीमारी का पता लगाना पड़ता है और उचित दवा देनी होती है।"

क्लोन नर्सरी एक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई थी, उसके चारों ओर से बांस की दीवार थी और ऊपर का नीचा छप्पर भी घास फूँस से ढका हुआ था। एक भाग पर मिट्टी की क्यारियां

बनी थीं और दूसरे भाग में पोलीथीन की थैलियों में चाय की कलमें रखी हुई थीं।

क्लीन कटिंग का मतलब था एक कलम जिसके ऊपरी हिस्से पर एक एक पत्ती ही थी और उसका तना एक इंच लंबा था। यह कलम एक झाड़ी से काटी गई थी जो विशेष रूप से क्लोनिंग के लिए उगाई गई थी। इन कलमों की मिट्टी की क्यारियों में या उपजाऊ मिट्टी से
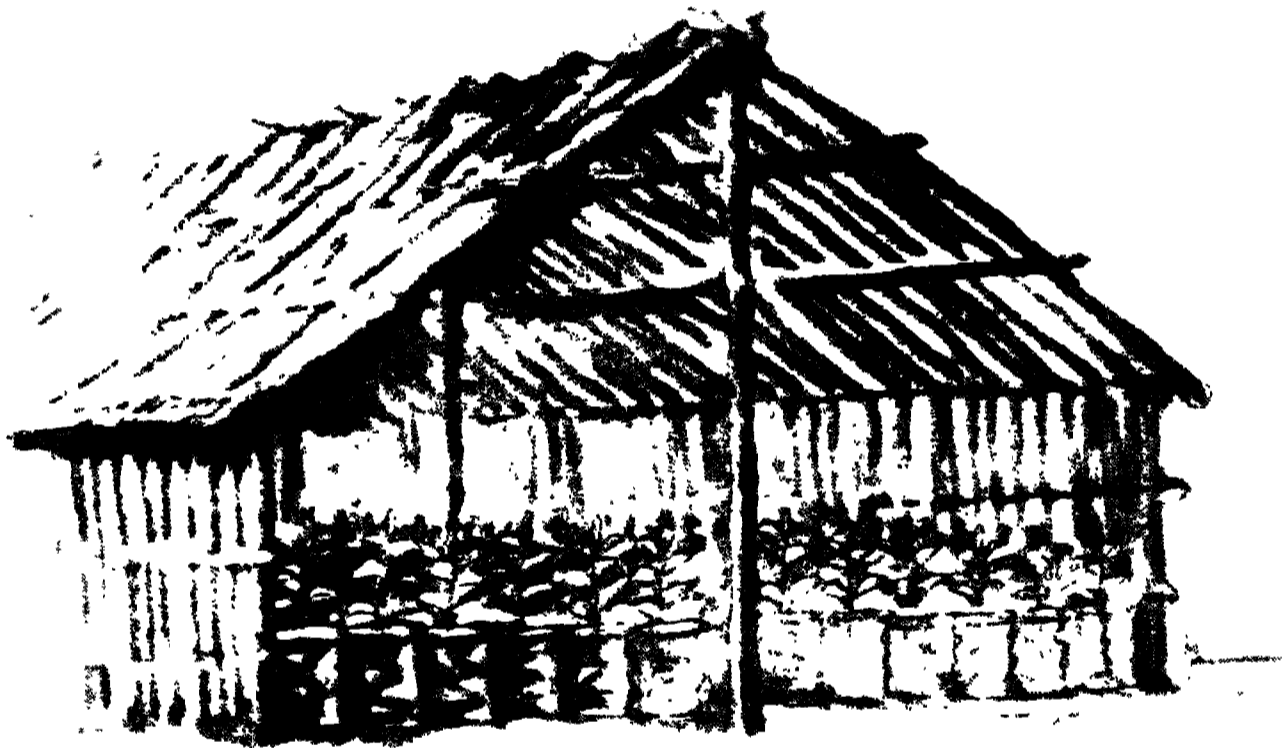
भरी पोलीथीन की थैलियों में लगाया गया था। दस सप्ताह के अंदर इसमें जड़ें निकल आती हैं और एक वर्ष बाद इन कलमों को वहां से ले जाकर उद्यान स्थल पर लगाया जाता है।

"बीज नर्सरी भी है" मि. बरुआ ने बताया "किन्तु बागान वाले आजकल कलम लगाना अधिक पसंद करते हैं। कलम लगाते समय उसी नस्ल की शुद्धता को बनाए रखते हैं। इससे

कोई वर्णशंकर नस्ल तैयार नहीं होती। प्रत्येक चाय की झाड़ी की कलम लगा कर उसकी मूल झाड़ी की विशेषता को बनाए रखा जाता है।''

''फिर भी बीजों का उपयोग क्यों किया जाता है'' राजवीर ने पूछा।

''बीजों की आवश्यकता नियंत्रित पौधों की एक दूसरे की कलम लगा कर बेहतर क्वालिटी के वर्णशंकर पौधे उठाने के लिए होती है। इसके अतिरिक्त बीज सस्ते होते हैं और कलमों की अपेक्षा इनमें देखभाल की कम आवश्यकता होती है।''

''अंकल, छोटे पौधे से भरे पूरे चाय के पौधे बनने में कितना समय लग जाता है।''

''पत्तियों को पहले वर्ष से ही तोड़ा जा सकता है। किन्तु झाड़ी को विकसित होने में लगभग पांच वर्ष लग जाते हैं। चाय के पौधे की जिंदगी भी इतनी ही होती है जितनी हमारी, लगभग साठ वर्ष।''

वे फिर से जीप में चढ़ गए। मि. बरुआ उन्हें बागान के संकरे रास्ते से ले चले। एक क्षेत्र

में रासायनिक पदार्थ का छिड़काव हो रहा था। मंगला वहीं काम कर रहा था उसने उन्हें देखा तो दूर से ही अभिवादन किया।

"चलो यहां उतर लें" जीप रोक कर मि. बरुआ ने कहा।

चाय की झाड़ियों तक पहुंचने के लिए उन्हें एक गहरे गड्ढे से गुजरना पड़ा। सुपारी के वृक्ष के संकरे तने पर से गुजर कर उन्हें वह गड्ढा पार करना पड़ा। अन्य लोग तो आसानी से पार हो गए किंतु राजवीर को इसमें बड़ी कठिनाई हुई। वह कुछ कदम हिचकिचाते हुए चला और बीच में डगमगाने लगा और फिर वह सीधे न चल कर आड़े चलने लगा। जैसे लोग रस्सी पर चलते हैं किन्तु जैसे ही वह गिरने लगा उसने अपने शरीर को संभाला और सीधा होते हुए उस पार कूद गया।

उसके इस प्रयास पर सभी ने तालियां बजा कर स्वागत किया। यहां तक कि टीपू ने भी जोर जोर से भौंक कर अपनी खुशी प्रकट की।

"ये गड्ढे !" राजवीर ने उत्तेजित हो कर कहा "ऐसा लगता है ऐसे बहुत गड्ढे होंगे। बागान में ऐसे गड्ढे क्यों बनाए गए हैं ?"

"ये बागान की जल वहन प्रणाली के हिस्से हैं," मि. बरुआ ने स्पष्ट किया "चाय की उपज गर्म और आर्द्रता वाली जलवायु में अच्छी होती है उसके लिए अच्छी वर्षा का होना जरूरी है। किन्तु यदि वर्षा के जल को जड़ों में इकट्ठा होने दिया जाएगा तो जड़ें सड़ जाएंगी और पौधा मुरझा जाएगा। ये गड्ढे पानी इकट्ठा होने से रोकते हैं।"

वे छिड़काव करने वाले दल के पास पहुंच गए। प्रत्येक सदस्य के पास पीठ पर लदा स्प्रेयर था। वे स्प्रेयर के लीवर को ऊपर नीचे खींचते और उससे रसायन की फुहार जमीन पर डालते जाते थे।

"ये घासपात नाशक दवा छिड़क रहे हैं" मि. बरुआ ने कहा। "यदि यह कीटाणुनाशक दवा होती तो उसे ये झाड़ियों पर छिड़काते। घासपात, मइकानिया के समान, फूस वाली घास है और वह चाय के पौधे के चारों तरफ फैल जाती है तथा उसकी उपज को बढ़ने से रोकती है या उसकी उपज को तेजी से नहीं बढ़ने देती"।

"आपने कीटाणुनाशक दवा के बारे में बताया। क्या कीटाणु भी चाय के पौधों को नुकसान करते हैं !" राजवीर ने पूछा।

"हां क्यों नहीं। लूपर्स, ग्रीन फ्लाईज, थ्रिपस और बिच्छू बूटी (बिच्छू नाम का पौधा) से बहुत नुकसान हो सकता है।"

थोड़ी देर में मंगला भी वहां आ गया। उसके चेहरे पर वही चिरपरिचित मुस्कान थी।

"कल हम लोग नदी में तैरने जाएंगे।" प्रांजल ने मंगला से कहा "साथ चलोगे"।

"हां क्यों नहीं" मंगला ने कहा "कब"।

"दोपहर में पिता जी राजवीर को सुबह कारखाना घुमाने ले जा रहे हैं।"

"ठीक है"। मंगला ने कहा "उसके बाद हम लोग मछली पकड़ने चलेंगे। मैंने कुछ जाल बनाए हैं उन्हें चैक करना होगा।"

लाल चोंच वाले तोतों का एक दल उनके ऊपर से उड़ता हुए गुजर गया और एक वृक्ष की छाया में बैठ कर शोर मचाने लगा। स्वच्छ नीले आकाश में कहीं दो पतंगे गोल गोल घूम रहीं थी और दूर एक सफेद कपोत अपने नीड़ की ओर उड़ता दिखाई दे रहा था।
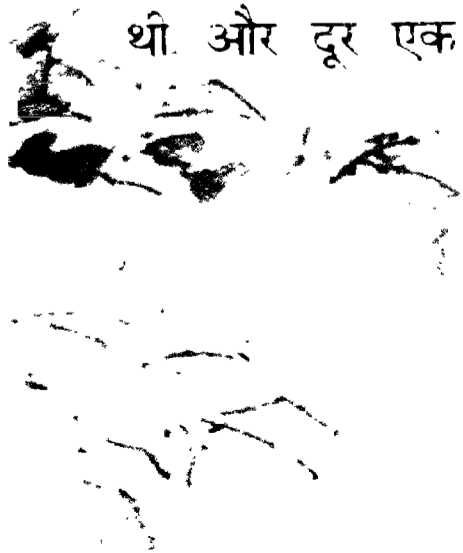
अध्याय 3

उन्होंने मंगला से विदा ली और जीप पर सवार हो गए। सूर्य की तिरछी किरणें ऊंचे छायादार घने वृक्षों में से होकर चाय की झाड़ियों पर धूप और छाया का मनोहर दृश्य प्रस्तुत कर रही थीं। राजवीर इस दृश्य तथा छायादार वृक्षों को देख कर आनंद से अभिभूत हो उठा।

"ये वृक्ष भी बहुत उपयोगी हैं" मि. बरुआ ने बताया "ये सूर्य की किरणों पर नियंत्रण रखते हैं और चाय के पौधों की पत्तियों पर तापमान 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड बनाए रखते हैं। यदि पौधों को सीधे ही गर्मी में सूर्य के सामने खुला छोड़ दिया जाए तो पत्तियों पर तापमान बढ़कर 40^0 सेंटीग्रेड हो जाएगा और पत्तियां जल जाएंगी तथा काली पड़ जाएंगी।"

"किन्तु अंकल, क्या सूर्य का प्रकाश पौधों के विकास के लिए जरूरी नहीं है ?" राजवीर ने प्रश्न किया।

"है, किन्तु अधिकता होने से यह नुकसान दायक भी है। ये छायादार वृक्ष उत्तर-पूर्व दिशा में कतार में लगाए जाते हैं। जब पूर्व में सूर्योदय होता है तब वृक्षों के पश्चिमी किनारे से झाड़ियों पर छाया होती है। दोपहर में पूर्व की तरफ की झाड़ियों पर छाया होती है। इस प्रकार सूर्य का प्रकाश समान रूप से मिलता रहता है। ये वृक्ष मजदूरों को भी छाया प्रदान करते हैं।"

"किन्तु ठंड में कैसा होता होगा" राजवीर ने जानना चाहा "क्या वृक्षों की वजह से उन दिनों सूर्य के प्रकाश की कमी नहीं होती।"

"बिल्कुल नहीं। हम छायादार वृक्षों का सावधानी पूर्वक चुनाव करते हैं। उदाहरण के लिए ये वृक्ष अलबीजिया ओडोराटिसीमा हैं। इनके पत्ते अक्टूबर मास में झड़ते हैं। उस समय ठंड की शुरूआत होती है। मार्च के आसपास इन वृक्षों में नई कोंपलें आ जाती हैं और इसके

हरे चिकने पत्ते भीषण गर्मी के दिनों में ठंडी छाया देते हैं।''

''किन्तु राजवीर का समाधान नहीं हुआ, उसने आगे पूछा कि क्या ये जमीन की उत्पादकता को कम नहीं करते, ये तो बड़े बड़े वृक्ष हैं।''

''नहीं ऐसा नहीं है, इसके विपरीत ये नाइट्रोजन गैस और अधिक मात्रा में देते हैं। इससे जो पत्ते झड़ते हैं, वे सड़ जाते हैं और तब उनसे जमीन को अच्छी खाद मिलती है। चाय-बागान की हर चीज उपयोगी होती है। यहां कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं किया जाता है। आज बहुत सवाल हो गए। चलो घर चलें जहां एक कप.....,''

''चाय हो जाए।'' प्रांजल ने वाक्य पूरा किया और सब उसकी बात पर हंस पड़े।

रात के गहराते ही बच्चे पहली मंजिल के बरामदे में बैठ गए। हजारों जुगुनू रात में यहां वहां प्रकाश कर रहे थे। रात्रि के घने अंधकार में किसी वृक्ष से उल्लू बोल उठा। दूर नीचे किसी बस्ती से एक झूमर गीत की कोरस स्वर मे लयात्मक आवाज उनके कानों तक पहुंच रही थी।

एका-एक राजवीर ने दूर क्षितिज पर एक अद्भुत प्रकाश का गोला देखा। कभी वह सामने दिखाई देता और कभी आंखों से ओझल हो जाता। ज्यों ज्यों वह नजदीक आता जाता वह घटता जाता था।

''हे, वो क्या है!'' राजवीर ने विस्मित होते हुए कहा।

''भूत!'' प्रांजल ने उत्तेजित होकर कहा।

''ये कंजूस, बूढ़े लोगों के भूत होते हैं और जहां सोना गड़ा होता है, उसकी रक्षा करते हैं'' अलका ने गंभीर होकर स्पष्ट किया।

''भूत'' राजवीर ने चौंकते हुए कहा।

''ऊंह'' प्रांजल ने उपहास करते हुए किन्तु अस्थिर मन से बताया ''वे विलओविस्प आग के गोले हैं जिनमें दलदल की गैसें भरी हैं।''

''मूर्ख मत बनाओ'', अलका ने बताया ''बूढ़ी जलेश्वरी ने मुझे बताया था कि उसने ऐसी चीजों को अपनी आंखों के सामने बूढ़ा आदमी बनते देखा है।''

वहां सन्नाटा छा गया जिसे प्रांजल के माता-पिता के आगमन ने तोड़ा।

''चाय-बागान का जीवन तो बहुत ही सीधा साधा और शांत होता होगा।'' राजवीर ने टिप्पणी करते हुए कहा।

''उन्हें चीते के बारे में बताओ'' श्रीमती बरुआ ने स्मरण कराते हुए कहा।

''चीता, अंकल'' राजवीर ने उत्तेजित होकर कहा।

''कभी कभी जंगली जानवर पास के जंगल से घूमते हुए यहां आ जाते हैं'' मि. बरुआ ने कहा और वे इन बागानों में आतंक पैदा कर देते हैं। दो वर्ष पहले मैंने एक ऐसे ही रायल बंगाल टाइगर को मारा था, जो आदमखोर हो चुका था। जंगली हाथी भी कभी कभी तबाही मचा देते हैं।

''पिछले पखवाड़े एक चीता हमारे बागान के मजदूरों को बहुत आतंकित कर रहा था। हमारे एक सरदार सावन ने मुझे बताया कि रात में वह चीता उसके घर के आसपास घूम रहा था और एक बैल उठा ले गया।''

''ये सरदार क्या होता है, अंकल!'' राजवीर ने पूछा।

''चाय बागान बहुत बड़ा क्षेत्र है'', मि. बरुआ ने स्पष्ट किया ''और उसमें हजारों मजदूर काम करते हैं। सुविधा के लिए इसे खंडों में विभाजित किया जाता है जिसमें मजदूरों को समूह में एक विशेष प्रकार का काम दिया जाता है। प्रत्येक समूह का एक नेता होता है जिसे सरदार कहते हैं। यह दल का कप्तान होता है, ऐसा पहले भी होता था।''

''डेडी क्या आपने चीता पकड़ने की कोशिश नहीं की थी।'' प्रांजल ने पूछा।

''अरे! हां। मैने बागान में तीन रातें उसकी निगरानी की किन्तु वह नहीं दिखा। मैंने शिकार के लिए एक बकरा भी बांध रखा था किन्तु चीते ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह बहुत ही चालाक जानवर है और उसने अपने पंजों के चिन्ह भी नहीं छोड़े थे। हमारे मजदूर तो इतने डर गए थे कि वे रात में अपने घरों से बाहर निकलने का जोखिम नहीं उठाते थे।''

राजवीर और भी बहुत कुछ जानना चाहता था तभी सब रात्रि भोजन के लिए चल पड़े।

अध्याय 4

अगले दिन सुबह वह तड़के ही नाश्ता करने बैठ गए।

"चाय में और दूध लोगे, राजवीर?" श्रीमती बरुआ ने पूछा।

"नहीं, ठीक है आंटी। मैं वैसे ही कड़क चाय पसंद करता हूँ।"

"तुम्हारे अंकल तो जरा भी दूध नहीं लेते." श्रीमती बरुआ ने मि. बरुआ की ओर देख कर कहा।

"यह सही है" मि. बरुआ ने सहमत होते हुए कहा, "चाय का स्वाद न केवल हर व्यक्ति के लिए बल्कि हर देश में अपनी अपनी पसंद का होता है। हम चाय में चीनी और दूध मिलाते हैं किन्तु चीनी और जापानी खालिस चाय पीते हैं। वे उसमें दूध या चीनी नहीं मिलाते। वे हरी पत्ती वाली चाय पीते हैं।"

"वह क्या होती है" राजवीर ने पूछा।

"परिष्कृत या तैयार चाय बुनियादी तौर पर तीन प्रकार की होती है-आर्थोडाक्स, सी.टी.सी. और हरी पत्ती वाली चाय। हरी पत्ती वाली चाय के मामले में चाय की पत्तियों को वाष्प में सुखाया जाता है जिससे उसके इंजाइम्स मर जाते हैं और फिर उसे सुखाया जाता है। उसमें कोई कीड़े वगैरह नहीं लगते। इस प्रकार पत्तियों के मौलिक संघटक बने रहते हैं।"

"चीनी और जापानी हरी पत्ती की चाय को उबालते हैं और उसे चीनी या दूध मिलाए बिना पीते हैं। कभी कभी उसमें जासमीन के टुकड़े सुगंध पैदा करने के लिए डाल दिए जाते हैं। जापानियों ने चाय पान को एक व्यापक अनुष्ठान बना दिया है और इससे उनके जीवन और संस्कृति पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।"

"बनी बनाई चाय भी तो होती है, है न डैडी?" अलका ने पूछा।

"हां, वैसे ही जैसी बनी बनाई काफी। आपको केवल एक कप गर्म पानी में चाय की थैली ही डुबानी होती है। चाय के वैज्ञानिकों ने कार्बोनिक चाय का भी विकास किया है जो बोतलों में पाई जाती है। शीघ्र ही तुम ठंडी चाय की बोतल उसी प्रकार पियोगे जैसे अभी शीतल पेय पीते हो।"

"वे इसके आगे और क्या सोच रहे होंगे।" प्रांजल ने आश्चर्य से भर कर पूछा।

"हर दिन एक नया आविष्कार किया जा रहा है" मि. बरुआ ने व्यक्त किया "अच्छा अब चलो, अब हमें कारखाने के लिए रवाना होना चाहिए।"

उसी समय एक व्यक्ति उनकी तरफ दौड़ता आया। वह ऊंची आवाज में "बड़ा साब। बड़ा साब।" पुकार रहा था।

"ये बिरची है। मंगला का बाप", प्रांजल ने राजवीर को बताया।

"बड़ा साब। माल गोदाम में चोरी हो गई है" बिरची ने बिना रुके कहा "किसी ने चाय की पेटियां चुराई हैं।"

"क्या!" मि. बरुआ ने उत्तेजित होकर कहा "वहां कितनी पेटियां थी।"

"मुझे नहीं मालूम बड़ा साब! डिस्पैच क्लर्क, डेका बाबू ने मुझे आपको लिवाने के लिए भेजा है।"

मि. बरुआ ने टेलीफोन पर थाने में चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई। फिर वह और बच्चे माल गोदाम की ओर रवाना हो गए।

अव्यवस्थित रूप से फैले कारखाने के कंपाउंड को कंटीले तारों की बाड़ी लगा कर घेरा गया था। माल गोदाम मुख्य कारखाने के भवन से कुछ दूरी पर एक कोने में बना था।

माल गोदाम के सामने पहले से ही भीड़ इकट्ठी हो गई थी। वहां बागान के तीनों सहायक मैनेजर भी हाजिर थे। मि. बरुआ को देखते ही डेका डिस्पैचं क्लर्क उनकी ओर दौड़ पड़ा।

"सर। चालीस पेटियां गायब हैं।" उसने कहा।

"मुझे साफ साफ बताओ क्या हुआ" मि. बरुआ ने तीखे स्वर में कहा।

"सर, चाय की पेटियां आज ही सुबह भेजी जानी थीं। कल शाम मैंने स्वयं दरवाजे पर ताला लगाया था। माल गोदाम का यही एक मात्र प्रवेश द्वार है। जब मैंने इसे सुबह खोला तो

माल गोदाम खाली था। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि ताले को बिल्कुल नहीं छेड़ा गया है।''

''प्रत्येक पेटी में कितनी चाय थी।''

''पचास किलोग्राम सर।''

''इसका मतलब है 2000 किलोग्राम। सबसे अच्छी क्वालिटी की चाय थी। अतः लगभग 50,000 रु० का नुकसान हुआ।''

''लगभग क्यों, अंकल।'' राजवीर बीच में बोल पड़ा ''क्या इनकी कीमत तय नहीं होती ?''

मि. बरुआ ने शीघ्रता से किन्तु धैर्यपूर्वक उत्तर दिया तुम जानते ही हो राजवीर, कि चाय बागान में नहीं बेची जाती। हम उसे गोहाटी या कलकत्ता के नीलाम केंद्रों पर नीलाम के लिए दलालों को भेज देते हैं। चाय का स्वाद निर्धारित करने वाले उसका नमूना तैयार करते हैं। उसकी कीमत तय करते हैं। वह चाय की पहली कीमत होती है उसके आधार पर ही बोली लगती है और सबसे ऊंची बोली बोलने वाले को चाय बेच दी जाती है।

मि. बरुआ ने एकाएक बिरची चौकीदार को बुलाया।

''कल रात तुमने यहां कोई गड़बड़ी देखी थी।''

''नहीं, बड़ा साब। यहां तो माल गोदाम के पास कोई भी नहीं आया।''

''तुम्हें पक्का पता है, कि तुम ऊंघ रहे थे।''

''आप ऐसा कैसा कह सकते हैं, साब। सावन ने जो चीता देखा था, उसने तो मुझे इन दिनों बहुत अधिक सतर्क कर दिया है।''

वे माल गोदाम के अंदर गए। वह एक ही कमरे की इमारत थी। उसका फर्श चिकनी लकड़ी का बना था। वहां कोई खिड़की भी न थी। रोशनदान पर मोटी मोटी शलाकाएं लगी हुई थीं।

डिस्पैच क्लर्क की टेबिल एक कोने पर थी। उस पर एक कपड़ा बिछा था जिसका एक कोना जमीन को छू रहा था और उससे टेबिल का सामने का भाग दिखता ही नहीं था। बाकी सारा माल गोदाम खाली पड़ा था।

राजवीर और प्रांजल ने एक दूसरे की ओर उत्सुकता से देखा। उन्हें यहां अपनी जानकारी बताने का मौका मिला था, जिसे उन्होंने दर्जनों जासूसी उपन्यास पढ़ पढ़ कर इकट्ठा की थी।

आज उसे व्यवहार में लाने का मौका मिला था।

मि. बरुआ और अन्य लोग गंभीर विचार-विमर्श में लगे हुए थे तभी बच्चे माल गोदाम का एक चक्कर लगा कर पहेली हल करने में लग गए।

प्रांजल माल गोदाम के फर्श पर एक जगह घुटनों के बल बैठ गया और एकाएक उसने चिल्ला कर कहा "राजवीर अलका, इधर आओ।"

फर्श पर कीचड़ से सने पैरों के निशान थे।

"अलका, यहां पिछली बार बरसात कब हुई थी।" प्रांजल ने पूछा।

"लगभग एक सप्ताह पहले।"

"गजब हो गया" प्रांजल ने कहा "एक हफ्ते से बरसात नहीं हुई है, बाहर की जमीन पत्थर की तरह कड़ी है, फिर भी ये कीचड़ से सने पैर के निशान। किसी के जूतों के तल्ले में गीली कीचड़ लगी हुई थी।"

"यह एक महत्वपूर्ण सुराग हो सकता है।" राजवीर ने स्वीकार किया।

वे यहां वहां निष्फल प्रयास करते रहे, तभी राजवीर को पीली मिट्टी का एक ढेला मिला। वे उसे मि. बरुआ के पास ले गए।

"अंकल! बागान में किस प्रकार की मिट्टी है।"

"रेतीली और तीखी" मि. बरुआ ने थोड़ा विस्मित होते हुए उत्तर दिया। फिर धैर्यपूर्वक उन्होंने स्पष्ट किया "दोमट मिट्टी में रेत और धूल का बराबर बराबर अनुपात होता है। रेतीली

दोमट मिट्टी वह है जिसमें धूल की अपेक्षा रेत का प्रतिशत अधिक होता है। चाय के लिए यह आदर्श मिट्टी है क्योंकि इसमें से पानी छन कर अंदर तक पहुंच जाता है।''

"तो यह पीली मिट्टी का ढेला माल गोदाम के फर्श पर क्या कर रहा था?''

मि. बरुआ ने मिट्टी की जांच की, निश्चित रूप से वह बागान की मिट्टी नहीं थी। वह इस रहस्य को सुलझाने में लगे हुए थे कि पुलिस आ गई।

उन्होंने मिट्टी के उस टुकड़े को राजवीर को लौटा दिया और पुलिस स्टेशन के थाना इंचार्ज श्री कोकोती का स्वागत करने के लिए मुड़ गए। राजवीर ने उस मिट्टी को कागज के एक टुकड़े में सावधानी पूर्वक लपेटा और उसे अपनी जेब मे खिसका लिया।

पुलिस थानेदार कोकोती इस बात से बड़ी उलझन में पड गया कि माल गोदाम का दरवाजा खोले बिना चोर उसमें कैसे घुस गए।

''मैं चारों तरफ मौका मुआयना करूंगा और चोरी का पता लगाऊंगा'' उसने मि. बरुआ से कहा।

''हमें कुछ सुराग मिले हैं'' राजवीर ने एक ही सांस में कहा। ''क्या आप उन्हें देखना चाहेंगे।''

''डैडी, क्या हम लोग अन्वेषण में कोई मदद कर सकते हैं।'' प्रांजल ने पूछा।

कोकोती ने नाक भौं सिकोड़ कर कहा, ''अपराधियों को पकड़ना बच्चों का खेल नहीं है। कृपया इन बच्चों से कहिए कि वे मेरे काम में हस्तक्षेप न करें।''

''ये ठीक कहते हैं'' मि. बरुआ ने कहा, ''बच्चों, तुमको सरकारी जांच पड़ताल में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। तुम लोग तैरने क्यों नहीं चले जाते। वहां तुम लोग जाने वाले थे, न। मैं आज तुम लोगों को कारखाने की सैर नहीं करा सकता, अच्छा।''

अलका और दोनो लड़के बाहर चले आए। वे नाराज थे और झिड़की से दुखी भी।

अध्याय 5

बच्चों को कोई काम तो था नहीं, अतः उन्होंने तैरने के लिए नदी की ओर जाने का निश्चय किया। बाहर उन्हें मंगला मिल गया और वह भी साथ हो लिया।

बंगले की ओर जाते समय रास्ते में उन्होंने मंगला से अपने सुराग के बारे में बताया जो उन्हें अभी तक मिला था। उन्होंने श्रीमती बरुआ को अपने कार्यक्रम के परिवर्तन के बारे में बताया और टीपू को लेकर वे नदी की ओर चल पड़े। नदी ढेकियाबाड़ी बागान की दक्षिणी सीमा पर बहती थी।

सनसनीखेज चोरी से काम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। चाय पत्ती तोड़ने वाले चाय बागान में अपना काम करते रहे।

"तुम्हारे ये पत्ती तोड़ने वाले बहुत सुस्त हैं" राजवीर ने टिप्पणी की। "मैं इनसे आधे समय में दुगुनी पत्तियां तोड़ सकता हूं।"

मंगला को बहुत हंसी आई। वह हंसते हंसते लोटपोट हो गया।

"हो ! हो ! तुम ऐसा सोचते हो, आओ। ये सुखमनी है, मेरी बुआ। देखते हैं तुम दोनों में से कौन जल्दी पत्तियां तोड़ सकता है, तुम या बुआ।"

"राजवीर पत्तियां तोड़ना चाहता है उसे पत्तियां तोड़ने दो। तोड़ने दोगी न।"

वे चाय की झाड़ियों में घुस गए। पत्ती तोड़ने वाली बूढ़ी औरतों ने उन्हें देख कर मुस्करा कर स्वागत किया। राजवीर पत्तियां तोड़ने को तैयार हो गया। उसने दोनों मुट्ठियों से पत्तियों को एक साथ नोच लिया और उससे सारी पत्तियां टूट गई।

"इस तरह नहीं, छोटा साब।" सुखमनी ने कहा "आप प्रत्येक पत्ती को नहीं तोड़ें। आप

केवल दो पत्तियों को पकड़ें और उसके तने को पकड़ें। दूसरी और तीसरी पत्ती के बीच के तने को तोड़ दें, देखिए ऐसे।''

उसने सधी उंगलियों से दो पत्तियों का एक तना तोड़ा और उसे राजवीर को पकड़ा दिया। पत्तियां चूंकि नई कोंपलें थीं, वे बड़ी नाज़ुक और चिकनी थीं। उसका तना वास्तव में अंकुर नहीं था बल्कि वह एक ऐसी पत्ती थी जो अभी तक खिल नहीं पाई थी।

''हर साल बरसात के दौरान नई कोंपलें फूटती हैं।'' सुखमनी ने बताया ''ये और न कि पुरानी पत्तियां, चाय बनाने के काम आती हैं। यदि आप दो से अधिक पत्तियां और एक कली तोड़ेंगे तो उससे चाय की क्वालिटी पर बुरा असर पड़ेगा।''

''इसलिए चाय की झाड़ियों की कटाई छटाई की जाती है'' मंगला ने जोड़ा। ''यदि चाय के पौधे की छटाई न की जाए तो वह एक बड़ा पेड़ हो जाएगा। छंटाई से ये पौधे झाड़ी ही बने

रहते हैं और इससे इसकी शाखाएं भी अधिक होती हैं और इससे पत्तियां भी काफी मात्रा में तोड़ी जाती हैं।''

''यह ठीक कहता है'' सुखमनी ने स्वीकार किया। ''झाड़ियों से हमारी कमर भी सीधी रहती है'' और हम आसानी तथा कुशलता पूर्वक पत्तियां तोड़ सकती हैं।''

''अब मैं अपना मुंह बंद रखूंगा'' राजवीर ने वायदा किया और वे चल पड़े।

चाय बागान के किनारे की तरफ जो रास्ता जाता था वहां की जमीन पर चाय की झाड़ियां नहीं थीं। यहां पर ऐसे पौधे थे जिनकी पत्तियां चौड़ी पांखुड़ी के आकार की थीं।

''वह ग्वाटेमाला है'' प्रांजल ने उधर संकेत करते हुए बताया ''यह जमीन को तैयार करने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हरी फसल है। तुमने क्लोन नर्सरी में जो चाय की कलमें देखी थीं उन्हें यहां लगाया जाएगा। ग्वाटेमाला, मिमोसा और साइट्रोनेला जैसी हरी फसलें मिट्टी की उर्वरा के लिए आवश्यक आण्विक अवयय तैयार करते हैं और मरी हुई बेकार मिट्टी में फिर से जान डाल देते हैं, उसे उर्वरा बना देते हैं।''

''साइट्रोनेला? अरे यह वही घास तो नहीं है जिससे तेल निकालते हैं?''

''जी हां, यह वही साइट्रोनेला है जिससे भीनी भीनी नींबू की खुशबू आती है और जिसका उपयोग साबुन और सुंगध (सेंट) बनाने में करते हैं। अनेक बागानों में आजकल यह वाणिज्यिक उपयोग के लिए उगाई जाती है।''

थोडी देर में वे चाय बागान की सीमा पर पहुंच गए जहां तारों की बाड़ लगाई गई थी। वे लोहे के फाटक पर चढ़ गए और दलदली जमीन को पार करके नदी के पास पहुंच गए।

बाढ़ से बचने के लिए नदी के आसपास के किनारे ऊंची मिट्टी के बनाए गए थे। बच्चे उस पर चढ़ गए। राजवीर सबसे पहले ऊपर पहुंचा तो वह आश्चर्य से भर उठा और वहां की मिट्टी देखने के लिए झुका।

उसने अपनी पाकेट से वह मिट्टी निकाली जो उसे माल गोदाम में मिली थी। अब शक की कोई गुंजाइश नहीं थी। दोनों मिट्टियां एक जैसी थी। पीली मिट्टी किस्म की।

''चोर यहां आए थे।'' राजवीर ने उत्तेजित होकर कहा।

''जमीन तो कड़ी है,'' प्रांजल ने टिप्पणी की ''जब तक कि मिट्टी गीली न हो, वह जूतों में नहीं चिपक सकती।''

"इसका एक ही मतलब हो सकता है" अलका ने अपना तर्क रखा कि चोर किसी समय नदी में जरूर गये होंगे।

लड़कों ने भविष्य के लिए इस नए सुराग को मन ही मन में नोट किया और पानी में छलांग लगा दी। अलका और टीपू तट पर ही घूमते रहे।

एकाएक अलका का पैर एक पहाड़ी के कोने से टकरा गया और वह लड़खड़ा कर गिर गई। वह चीख पड़ी और लुड़कते हुए तट की ओर गिरने लगी और वह लगभग नदी में गिरने ही वाली थी।

किन्तु अंतिम क्षणों में, उसके असहाय हाथों ने एक झाड़ी पकड़ ली जो उतार के अंत में उगी हुई थी। उसने उसे जोर से जकड़ लिया और लटक गई। नीचे नदी की तेज धारा बह रही थी।

अलका की चीख और टीपू के भौंकने की आवाज सुन कर दोनों लड़के जल्दी से नदी से बाहर निकले।

"अलका पकड़े रहना" प्रांजल ने वहीं से चिल्ला कर कहा "हम आ रहे हैं।"

किन्तु जब तक वे अलका के पास पहुंचते, झाड़ी अलका का वजन न सम्हाल पाई और उखड़ गयी। अलका नदी में गिर गई।

सहमे हुए बच्चे "छपाक" की आवाज सुनने के लिए रुके किन्तु वह केवल 'ढप्प' की आवाज थी। क्षण भर बाद अलका उठ खड़ी हुई, उसका चेहरा डर से पीला पड़ गया था किन्तु उसे कोई चोट नहीं आई।

बच्चे उसकी ओर अविश्वास से भर कर घूरते रहे। अलका के घुटने तक पैर झाड़ियों में डूबे हुए थे ऐसा लगता था कि वह पानी में खड़ी है।

जब वे उसके पास पहुंचे तो रहस्य खुल चुका था। लकड़ी की एक नाव किनारे पर बंधी हुई थी और झाड़ियों की घास फूस से यत्नपूर्वक छुपाई गई थी। अलका सीधे उसी में गिर पड़ी थी।

"ईश्वर की कृपा से तुम बच गई।"

"तुमने तो हमें डरा ही दिया था।"

"यह जगह तो मुझे संदेहास्पद मालूम होती है।" मंगला ने चिल्ला कर कहा।

"क्यों" प्रांजल ने पूछा "नदी के किनारे तो नाव बंधी रहती है, इसमे संदेह की क्या बात है। ऐसी तो दर्जनों नावें यहां बंधी होंगी।"

"ये तो ठीक है" मंगला ने जवाब दिया "कोई अपनी नाव इस तरह नहीं छिपाता जैसी यह छिपाई गई है।"

"हां अब तेरी बात मेरी समझ में भी आ रही है" राजवीर ने कहा "हम लोगों का यहां से जल्द ही हट जाना ठीक होगा।"

उन्होंने जल्दी जल्दी नाव को झाड़ियों से ढंक दिया और घर की ओर रवाना हो गए। जब वे बंगले के पास पहुंचे तो वे निश्चित कर चुके थे कि कोई महत्वपूर्ण बात हो गई है। चाय तोड़ने वाले मजदूर अपना काम छोड़कर समूह बना कर खड़े हुए बात कर रहे थे। चेहरों से उत्तेजना साफ साफ झलक रही थी।

सुखमनी दौड़ती हुई मंगला के पास आई। वह बहुत दुखी मालूम पड़ती थी।

"मंगला। पुलिस तुम्हारे पिता और डेका बाबू को गिरफ़ार करके ले गई है। उनके विचार से दोनों में से किसी ने चाय की पेटियां चुराई हैं।"

मंगला यह सुन कर भौंचक्का रह गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। प्रांजल ने उसके कंधे पर हाथ रखा और उसे एक तरफ ले गया।

"हमारे बंगले के पीछे जो टूल शेड है, वहां 3 बजे आ जाना" उसने धीमे स्वर में फुसफुसाकर कहा "हम लोग वहां बैठकर आगे की लड़ाई के बारे में विचार करेंगे।"

अध्याय 6

'मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि डेका और बिरची निर्दोष हैं'' दोपहर के खाने के समय मि. बरुआ ने कहा ''वे इस बागान में बीस साल से पहले से काम कर रहे हैं।''

''तो फिर पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार क्यों किया।'' प्रांजल ने कहा।

''पुलिस थानेदार इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि माल गोदाम में सामने का दरवाजा खोले बिना कोई नहीं घुस सकता। दरवाजा अवश्य खोला गया होगा और पेटियां उठा ले जाने के पश्चात बंद कर दिया गया होगा। इसीलिए उसने डेका को गिरफ़्तार किया क्योंकि उसके पास चाबियां थीं और बिरची चौकीदार था।''

प्रांजल कुछ कहने वाला ही था कि राजवीर ने उसे चेतावनी भरा संकेत देकर चुप करा दिया।

बाद में दोपहर में सारे बच्चे आंगन में बने टूल शेड में इकट्ठे हुए। मंगला बहुत दुखी था।

''हम लोग सबसे पहले तथ्यों की जांच करें और फिर अपने निष्कर्ष निकालें'' राजवीर ने आग्रह किया।

''मान लो डेका निर्दोष है'' प्रांजल ने बात शुरू करते हुए कहा ''तो चोरों के पास ताला खोलने के लिए चाबियों का डुप्लीकेट सैट अवश्य होगा।''

''किन्तु मेरे पिता जी ने भी तो उन्हें देखा होता और सीटी बजाई होती'' मंगला ने तर्क दिया।

''अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि चोर सामने के दरवाजे से नहीं घुसे'' प्रांजल ने कहा।

सभी ने सहमति में सिर हिलाए।

"किन्तु अंदर जाने का और कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है," अलका ने कहा। "हाँ, ये हो सकता है कि वे छत या बगल की दीवार को तोड़ कर अंदर घुसे हों, किन्तु ऐसा भी तो नहीं हुआ है।"

"इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं हो सकता कि वे जमीन खोद कर आए हों और फर्श से घुसे हों," राजवीर ने सुझाव दिया।

"हां ऐसा हो सकता है।" प्रांजल ने उत्साह से भरकर जोर से कहा। "याद है तुम्हें कीचड़ भरे पैरों के निशान, जबकि एक हफ्ते से बरसात नहीं हुई तो भी वे पैर के निशान ताजे और कीचड़ से सने थे।"

"हां।" मंगला ने कहा। "ऐसी मिट्टी तो जमीन के अंदर किसी सुरंग की हो सकती है। इससे स्पष्ट हो जाएगा कि आखिर पिता जी को कोई क्यों नहीं दिखाई दिया।"

"किन्तु हमने तो माल गोदाम की तलाशी ली थी," अलका ने कहा "वहां तो ऐसा कुछ नहीं दिखा, जिससे सुरंग का पता चलता हो।"

"किन्तु हमने भी ऐसा नहीं देखा" राजवीर ने स्वीकार किया "हम अब देखेंगे। मंगला, क्या हम लोग माल गोदाम में फिर से जा सकते हैं।"

"हां क्यों नहीं। दरवाजे खुले हैं। माल गोदाम खाली पड़ा है इसलिए किसी ने उसे बंद नहीं किया है।"

वे सभी एक साथ निकल पड़े। जब वे माल गोदाम के पास पहुंचे तो वे निश्चिंत हो गए, क्योंकि दरवाजा खुला था, वहां कोई नहीं था।

वे अंदर जाकर सावधानी पूर्वक फर्श का मुआयना करने लगे।

एकाएक राजवीर का चेहरा खुशी से चमक उठा "अहा।" वह खुशी से चीख उठा। "बुनियाद तो यहां है प्रांजल, जरा इस डिस्पैच टेबल के नीचे तो देखो।"

उन्होंने सुबह फर्श की तलाशी ली थी किन्तु डिस्पैच टेबिल को हटाने के बारे में और उसके नीचे देखने के बारे में सोचा ही नहीं था। उन्होंने वह काम अब किया।

उन्होंने देखा कि उस पर एक छोटा सा वर्गाकार भाग कटा हुआ था वह इतनी अच्छी तरह काटा गया था कि वे संभवत उसे देख ही नहीं पाते यदि वे उसे नहीं ढूंढते।

मंगला ने एक छोटा सा चाकू निकाला और उसे उस कटे स्थान पर घुसेड़ दिया। उसने उस लकड़ी के टुकडे को इतना ऊपर उठा दिया कि उसमें उसकी अंगुलियों के जाने के लिए काफी जगह हो गई। उसके किनारे को उसने तेजी से पकड़ा और सारे भाग को ऊपर उठा लिया।

''ओफ!'' अलका उत्तेजना से चिल्ला उठी। उसे फर्श के नीचे एक गहरी चौड़ी सुरंग दिखाई दी।

चोरो ने लकड़ी के तखतों को चीर कर छत का द्वार बनाया था जिसे ठेलकर वे माल गोदाम में प्रवेश कर जाते थे। चाय की पेटियों को हटाने के पश्चात् उन्होंने छत के द्वार को छिपाने के लिए डिस्पैच टेबिल को फिर से उसी जगह रख दिया था जहां वह था। सुरंग में प्रवेश करने वाले अंतिम चोर ने उसे पीछे से बंद कर दिया था।

मंगला ने छत द्वार)ट्रेपडोर(को यथास्थान करते हुए कहा ''तो यह बात थी।''

''मिट्टी का टुकड़ा और छिपाई गई नाव का इससे गहरा संबंध है'' राजवीर ने कहा। ''चोरों ने माल गोदाम तक सुरंग बनाई और पेटियां निकाल कर नदी तक ले गए। नाव का उपयोग उन पेटियों को नदी के दूसरे किनारे तक पहुंचाने के लिए किया गया होगा। उन पेटियों को ले जाने के लिए वहां कोई ट्रक भी इतंजार कर रहा होगा।''

''हमें सुरंग का दूसरा सिरा भी ढूंढना चाहिए,'' मंगला ने कहा।

''सुरंग में से ही क्यों न चलें।'' राजवीर ने सुझाव दिया।

"इससे हम लोग चोरों तक सीधे पहुंच जाएंगे। ऐसा करना सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं होगा।" मंगला ने कहा।

"हम और कैसे पता कर सकते हैं।" अलका ने पूछा।

प्रांजल ने डिस्पैच टेबिल से कागज का एक टुकड़ा लिया और पेंसिल उठा ली।

"देखो" उसने कहा वह कागज पर एक हलका सा स्कैच उतारने लगा "स्वाभाविक है कि चोरों ने सुरंग बनाना दक्षिण से आरंभ किया होगा, जहां नदी है। सुरंग बहुत दूर नहीं हो सकती, ज्यादा से ज्यादा सौ मीटर दूर होगी। अतः यदि हम माल गोदाम से नाव तक सीधी रेखा खींचें और माल गोदाम से 50 से 100 मीटर के क्षेत्र में तलाश करें तो हमें सुरंग के मुंह का पता लग सकता है।"

वे माल गोदाम से सावधानी पूर्वक बाहर निकले और बताई गई दिशा की ओर बढ़ गए। काम का समय समाप्त हो गया था। अतः चाय की झाड़ियों के पास कोई नहीं था। वे चुपचाप आगे बढ़ने लगे किन्तु उनकी आखें चारों ओर सतर्कता से देख रहीं थीं। मंगला ने आखिर वह जगह ढूंढ ली।

सुरंग का मुंह एक गड्ढा खोद कर बनाया गया था। बांस का एक फ्रेम था जिसको कीचड़ से पोत दिया गया था और उससे सुरंग का मुंह ढँक दिया गया था। छोटी छोटी झाड़ियों को फ्रेम के ऊपर लगा दिया था जिससे कि छिपाई गई जगह बिल्कुल दिखाई न पड़े।

मंगला उस गड्ढे में कूद पड़ा और उसने ढन को निकाल दिया, इशारे से लड़कों को बुला कर दिखाया और ढक्कन फिर से लगा दिया।

"चलो यहां से जल्दी निकल चलें।" उसने तेजी से कहा "कोई हमें देख न ले"।

वे तेजी से चलते हुए और लगभग दौड़ते हुए टूल शेड में पहुंच गए।

"हमें पिता जी को इसी समय बताना चाहिए" प्रांजल ने फुसफुसाते हुए कहा "वह पुलिस को बता सकते हैं और डेका तथा मंगला के पिता को छुड़ा सकते हैं"।

"अभी नहीं", राजवीर ने गुनगुनाते हुए कहा "चोरों को अभी इसी धारणा में रखना चाहिए कि वे सुरक्षित हैं।"

"यह ठीक है" मंगला ने तत्परता से कहा। "हमें और अधिक साक्ष्य इकट्ठे करने चाहिए।"

"किन्तु कहां से शुरू किया जाए।" प्रांजल ने पूछा।

"चुराई गई चाय बहुत ही बढ़िया क्वालिटी की थी" मंगला ने शांत स्वर में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा। "किन्तु चोरों को इस बात का पता कैसे चला होगा।"

"तुम कहना क्या चाहते हो।"

"सीधी बात है, चोरों के साथ कोई ऐसा आदमी भी है जो चाय बागान में काम करता है।"

"सुरंग खोदने में भी समय लगा होगा" अलका ने संकेत दिया। "सुरंग से मिट्टी निकाली गई होगी और दूसरी जगह ले जाई गई होगी। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन लोगों को खुदाई करते किसी ने नहीं देखा।"

"इससे स्पष्ट है कि उन्होंने रात में काम किया है" राजवीर ने उत्तेजित होकर कहा।

उसी समय मंगला के दिमाग में भी कोई बात कौंधी।

"अरे बाबा।" उसने लगभग चिल्लाते हुए कहा हालांकि उसने उसे धीमे स्वर में बोलने की कोशिश की थी। "यह वही हो सकता है।"

"हुश।" सबने एक साथ मुंह पर उंगली रख कर कहा।

"सावन नामक एक सरदार है। वही सह-अपराधी हो सकता है।"

"वही जिसके बैल को चीता उठा ले गया था।" प्रांजल ने पूछा।

"अच्छा तो चीते के बारे में तुमने भी सुन रखा है। सावन ने ही यह कहानी फैलाई है जिससे बागान के मजदूर डर कर रात में अपने घर से न निकलें। अभी तक किसी ने भी चीता नहीं देखा।"

"हां, यही तो पिता जी कह रहे थे। उसके आने के बारे में उसके पंजे के निशान तक नहीं मिले थे।"

"हो सकता है," मंगला ने सुझाव दिया कि कोई चीता ही न हो। सावन ने कहानी इसलिए फैलाई हो कि जिससे चोर बिना किसी विघ्न के अपनी सुरंग खोद सकें।

वे चुपचाप कुछ समय तक सोचते रहे।

"सावन फैक्ट्री में पैकेजिंग मशीन पर भी तो काम करता है" मंगला ने अपना तर्क आगे बढ़ाते हुए कहा "चाय की पैकिंग करते समय वह चाय की क्वालिटी के बारे में भी तो जानता होगा।"

अध्याय 7

मि. बरुआ दूसरे दिन सुबह राजवीर और अन्य बच्चों को कारखाना दिखाने ले गए।

''यहां तो सब अद्‌भुत सा लगता है'' राजवीर ने साथ साथ चलते हुए कहा ''यह हरी पत्ती काली या कत्थई रंग में कैसे बदल जाती है।''

''वास्तव में हरी पत्तियों की नमी को पूरी तरह से निकालने के लिए ऐसा किया जाता है। साथ ही इससे इसके रंग और गंध को उभार दिया जाता है। इसमें किसी रसायनिक द्रव्य को नहीं मिलाया जाता। मशीन का प्रयोग प्रक्रिया को तेजी से कराने, क्वालिटी पर नियंत्रण रखने और अधिकाधिक उत्पादन करने के लिए किया जाता है। वास्तव में तुम घर में चाय बना सकते हो।''

''घर में कैसे।'' राजवीर ने पूछा।

''क्यों नहीं। अपरिष्कृत रूप से ही सही। ठीक उसी तरह जैसे प्राचीन काल में बनाई जाती थी।''

''अंकल, यह सब हरी पत्ती की चाय के साथ लागू होता है। किन्तु आपने सी.टी.सी. और आर्थोडाक्स चाय के बारे में बताया था, क्या वे अलग किस्म की चाय हैं।''

''बिल्कुल। आर्थोडाक्स की सुगंध अच्छी है, सी.टी.सी. बहुत पानी खाती है. आर्थोडाक्स को पकाते समय उबालना पड़ता है, जब कि सी.टी.सी. को छानना पड़ता है। उनके बनाने में जो अंतर है वह मैं तुम्हें कारखाने में दिखाऊंगा।''

कारखाने के द्वार पर दरबान ने फुर्ती से सलाम ठोककर उनका स्वागत किया। मि. बरुआ ने बिना दीवारों वाले केवल छत वाले शेड के बगल में ले जाकर जीप रोक दी। उस निर्माण के

अंदर लगभग आधे दर्जन एक के ऊपर एक चबूतरे बने हुए थे।

"ये चेंग कहलाते हैं। बागान से तोड़ी गई चाय की पत्तियों को यहां तौला जाता है और इन चेंगों पर फैला दिया जाता है। कुछ घंटों के भीतर ही पत्तियां मुरझाने लगती हैं। उनसे लगभग 30 से 40 प्रतिशत की नमी निकल जाती है। इसे प्राकृतिक रूप से सुखाना कहते हैं।"

पास में इसी प्रकार का एक और शेड था। किन्तु वहां टाट से मढ़े चबूतरों की बजाए कंक्रीट के चबूतरे थे और उन पर मोटे तार की जालियां लगी थीं जिन पर पत्तियां फैलाई गई थीं। शक्तिशाली बिजली के पंखे प्रत्येक नांद के सिरों में तेजी से घूम रहे थे।

"इसे नियंत्रित रूप से सुखाना कहते हैं।" मि. बरुआ ने स्पष्ट किया "प्राकृतिक मुरझाने में बहुत समय लगता है, विशेष रूप से नमी वाली जलवायु में इसलिए नियंत्रित ताप पर गर्म हवा इन नांदो में से भेजी जाती है।"

बच्चे मि. बरुआ के पीछे पीछे कारखाने में गए। कारखाने के अंदर दर्जनों मशीनों की खटपट की आवाज आ रही थी। यदि उनमें से किसी को दूसरे से कुछ कहना हो तो उसे ऊंची आवाज में बोलना पड़ता है। वहीं चाय की पत्तियों की तीखी सुगंध उनके नथुनों से टकराई।

मि. बरुआ ने तीन पायों वाली एक मशीन की ओर संकेत किया। "यह रोलिंग टेबिल है जहां मुरझा गई पत्तियों को चूरा बनाया जाता है या मोड़ा जाता है। जो भी रस पत्तियों से निचोड़ कर निकलता है उसे फैला दिया जाता है।"

चिपटी या गोल की गई पत्तियों को छानने के लिए उन्हें एक जाली में डाला जाता है। यह पाइप के आकार की मशीन होती है जो लगातार चलती रहती है।

"और यह छन्ना (सिफ्टर) है," मि. बरुआ ने बताना जारी रखा। "यह अच्छी तरह गोल हुई पत्तियों को छानकर अलग करता है। इस जगह सी.टी.सी. और आर्थोडाक्स की तकनीक में भेद है। आर्थोडाक्स चाय बनाने के लिए छानी गई पत्तियों को सीधे फरमेंटिंग रूम में ले जाया जाता है। सी.टी.सी. चाय को उन्हें उसके पहले एक और मशीन में डाला जाता है।"

"सी.टी.सी. का क्या अर्थ होता है अंकल।"

"कर्लिंग, टियरिंग और क्रशिंग। अर्थात पत्तियों को गोल घुंघराले बनाना, फाड़ना और चूर चूर करना। सी.टी.सी. मशीनें वास्तव में यही काम करती हैं।" उसी समय अच्छी तरह कतरी हुई चाय का गूदा मशीन के आउटलैट से बाहर निकला और अल्युमिनियम की ट्रे में ढेर

सारा गिर गया।

"जैसा कि तुम सी.टी.सी. विनिर्माण में देखते हो, पत्तियों को पूरी तरह काटा जाता है और उसका रस निचोड़ कर बराबर बराबर मिलाया जाता है। इससे पत्तियों में रंग आ जाता है। आर्थोडाक्स में जिसमें पत्तियों को नहीं काटा जाता है, रस धीरे-धीरे बाहर निकलता है इस लिए उसमें सुगंध बनी रहती है।"
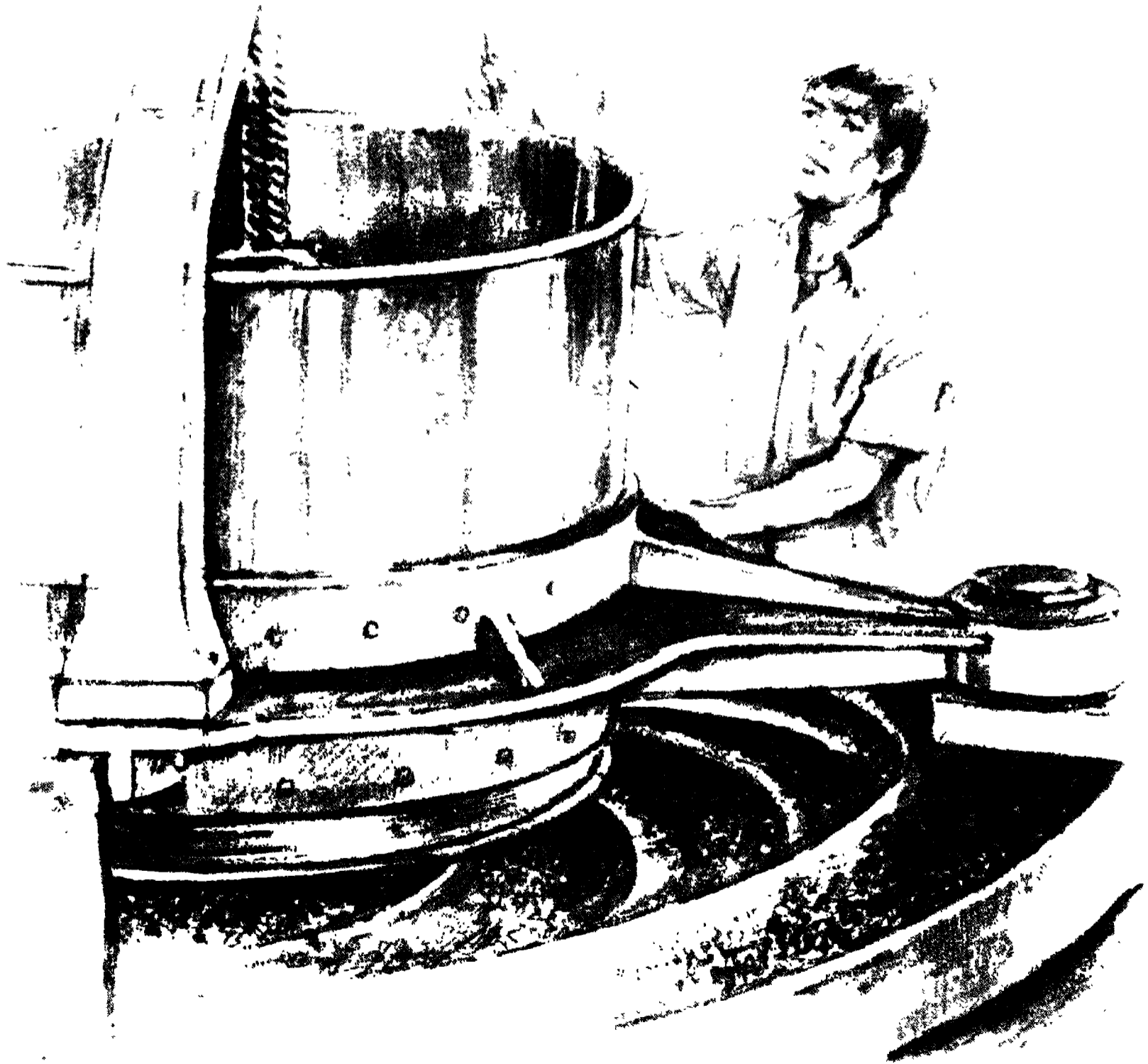
वे फरमेंटिंग रूम (सेंक कक्ष) में गए जहां पत्तियों को नांदों के ऊपर फैलाया गया था। सेंक स्वाभाविक रूप से दिया जाता है। राजवीर आश्चर्य से हरी पत्तियों को कत्थई रंग में बदलते देखता रहा।

"पूरी तरह से सेंक देने में एक घंटा लग जाता है" मि. बरुआ ने सधे हुए गाइड की तरह बताना जारी रखा "जिस आश्चर्य का तुमने उल्लेख किया था वह यहां होता है। जारणक्रिया से हरा रंग गायब हो जाता है। आक्सीजन वायु रसायनों से मिल कर पत्तियों पर प्रभाव डालती है और उनके रंग और गंध बदल देती है।"

अगले कमरे में पत्तियां सुखाई जाती थीं। उसमें पत्तियां सुखाने की बड़ी बड़ी मशीनें लगी थीं। कोयले की आग से या चाय सुखाने वाली तेल की भट्टी में से गूदा बनी चाय के बीच से बहुत अधिक तापवाली हवा भेजी जाती है।

"गर्म हवा पत्तियों में शेष नमी को भी समाप्त कर देती है और परिष्कृत उत्पादन को कुरकुरा और सूखा बना देती है। सूंघो इसे!" मि. बरुआ ने मुट्ठी भर चाय उठा कर राजवीर के हाथ में पकड़ा दी। पत्तियां गरम थीं और उनसे भीनी खुशबू निकल रही थी।

"अब केवल इतना काम रह गया है" मि. बरुआ ने बात जारी रखते हुए कहा "कि चाय के विभिन्न ग्रेडों में जैसे आरेंज पीकाय, पीकाय फेनिंग, ब्रोकन आरेंज पीकाय आदि में छांटा जाए और उसे पैक कर दिया जाए। यह छंटाई इन जालियों, कीप (फनेल) जैसी इन मशीनों से किया जाता है जिनके आखिरी उठे हुए उस सिरे तक चाय छनकर जाती रहती है। विभिन्न प्रकार के ग्रेडों में छांटने के लिए विभिन्न आकार और साइज वाली जालियों का उपयोग किया जाता है।"

अंततः वे उस कमरे में पहुंचे जहां चाय पैक की जा रही थी। एक सांवला सा आदमी जिसके चेहरे पर चेचक के भद्दे दाग थे, खनित्र)झाबा(से दोलन (वाइब्रेटिंग) मशीन पर रखी पेटियों में चाय भर रहा था।

मंगला ने जो विवरण दिया था उससे बच्चे उस व्यक्ति को पहचान गए। वह सावन था। वास्तव में सावन सरदार ही इस बात का सबसे अच्छा जानकार था कि कारखाने में किस क्वालिटी की चाय भरी जा रही है।

"चाय की सबसे बड़ी दुश्मन नमी है," मि. बरुआ इस बात से बेखबर थे कि बच्चों का ध्यान तो कहीं और लगा है, वह बताते जा रहे थे कि "यह पैकिंग मशीन, जो लगातार दोलतो

रहती है, यह सुनिश्चित करती है कि चाय अच्छी तरह पैक की जा रही है और चाय के बीच हवा की कोई गुंजाइश नहीं है। चाय की उन पेटियों में अंदर की तरफ अल्युमिनियम की पतली चादर का अस्तर लगा होता है जिससे नमी के अंदर आने से बचाव होता है।''

जैसे ही पेटी भरती थी कोई मजदूर उस पर ढक्कन लगा कर कील ठोक देता था। फिर पेटी पर उसके ग्रेड, क्वालिटी और चाय के बागान का नाम स्टेंसिल द्वारा छाप दिया जाता था।

''उत्पादन अच्छी क्वालिटी का हो रहा है। यह सुनिश्चित करने के लिए हम प्रति दिन चाय का सैंपल लेते हैं और कारखाने में ही उसकी जांच करते हैं।'' मि. बरुआ ने आगे बताया ''छोटे से घूंट से ही मैं यह बता सकता हूं कि चाय अच्छी है या बहुत ज्यादा सिंकी है या जल गई है।''

मशीनों की लगातार आवाज से वे अब तक अभ्यस्त हो गए थे और जब वह कारखाने से बाहर निकले तो उन्हें बाहर का शांत वातावरण बड़ा अजीब लगा।

कारखाने के भोंपू ने सुबह के काम की समाप्ति की सूचना दी। वे लोग अपने पीछे साइरन की तेज आवाज को छोड़ कर जीप पर रवाना हो गए।
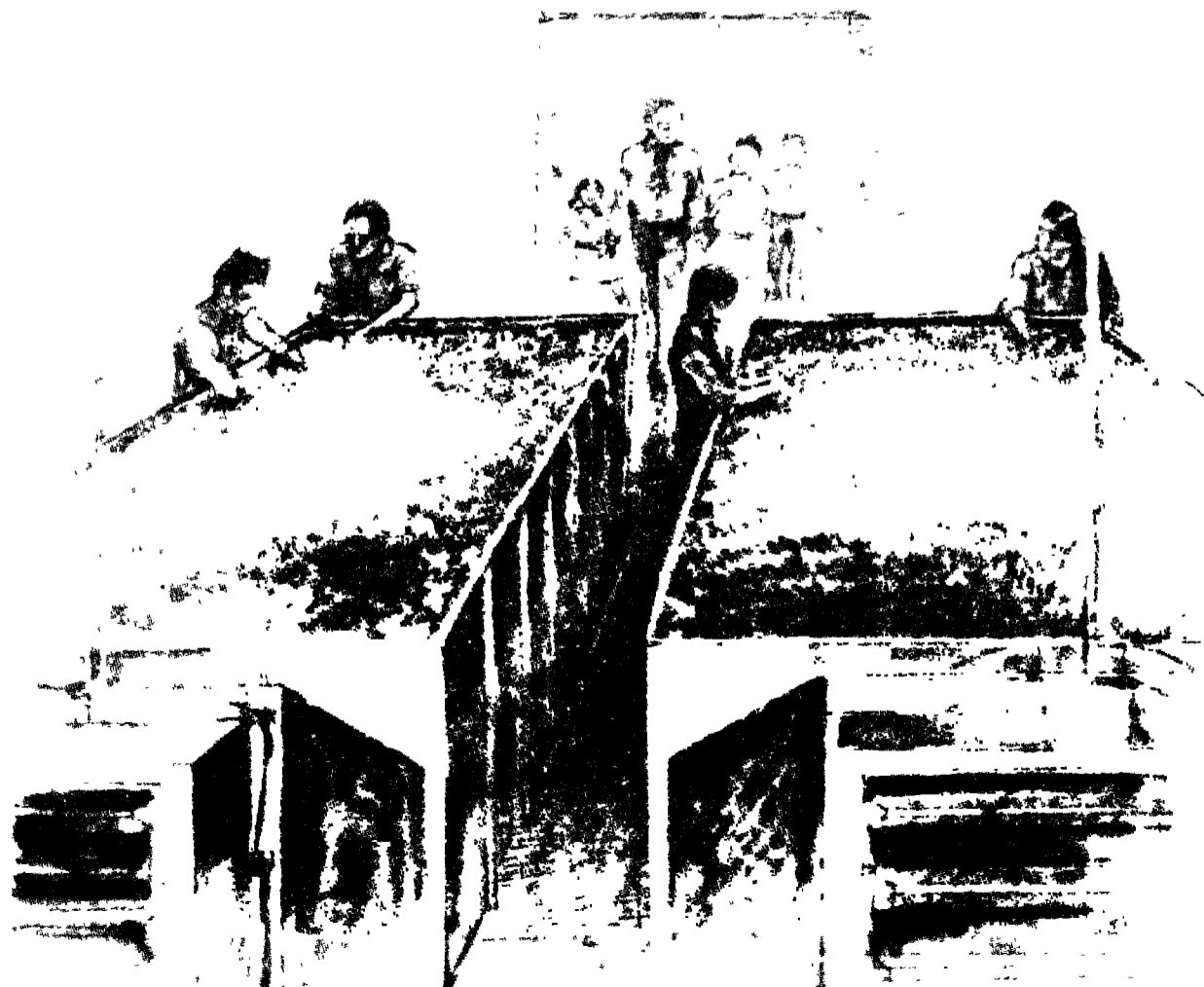
अध्याय 8

बागान के मजदूरों का काम 4 बजे समाप्त हुआ। 5 बजे शाम को बच्चे मंगला के साथ बस्ती की ओर रवाना हुए जहां मजदूर रहते थे।

फूस के छप्पर वाली झोपड़ियों की क़तारें बनी हुई थीं। हर झोपड़ी के आगे एक छोटा सा आंगन था। थोड़ी थोड़ी दूर पर पाताली नल लगे हुए थे जहां औरतें झुंड बना कर खड़ी बातें कर रही थीं या कपड़े धो रही थीं जब कि छोटे छोटे बच्चे घुटने के बल यहां वहां घूम रहे थे और खेल रहे थे। पड़िया व कुत्ते धूल भरी सड़क पर सुस्ता रहे थे और सुअर का एक बच्चा कीचड़ में लोट रहा था।

लेबर क्लब के बगल से बने मैदान में कुछ युवक फुटबाल खेल रहे थे। अनेक झोपड़ियों से रेडियो के संगीत की धीमी आवाज सुनाई दे रही थी।

"हम लोगों को संगीत और नृत्य बहुत पसंद है और जब कभी अवसर आता है, हम लोग उसका भरपूर मजा लेते हैं" मंगला ने अन्य साथियों को बताया।

बच्चों का ध्यान एक विशेष झोपड़ी में चल रही गतिविधि पर गया। वे वहीं रुक गए। झोपड़ी के द्वार को रंगीन कागज की झंडियों से अच्छी तरह सजाया गया था। पुरुष, स्त्रियां और बच्चे आंगन में चंद्राकार में बैठे हुए गीत गा रहे थे। आधा दर्जन औरतें एक दूसरे की कमर में हाथ लपेटे बड़े लयात्मक स्वर में गीत गा रहे थे और उसके साथ ही लयताल से उनके पैर थिरक रहे थे।

"झूमर नृत्य कर रहे हैं।" मंगला ने बताया।

"हमारे अनेक त्यौहार हैं जिनमें झूमर गाया और नाचा जाता है। टुशुपूजा और करमपूजा

हमारे अपने त्यौहार हैं किन्तु हम असमियां बीहू के साथ होली और काली पूजा भी मनाते हैं।''

''वे इस समय क्यों नाच रहे हैं।'' राजवीर ने पूछा।

''ओह। किसी की एक हफ्ते में शादी होने वाली है और उन्होंने अभी से उत्सव मनाना शुरू कर दिया है।''

सावन की झोपड़ी बस्ती के आखिरी छोर पर थी जैसी कि पहले से योजना बनी थी, मंगला थोड़ी दूर पर रुक गया जब कि प्रांजल, राजवीर और अलका उसके घर में घुसे।

सावन ने उनका स्वागत किया। उसने उन्हें बैठने के लिए मूढ़े दिए।

''हम चीते के बारे में जानना चाहते हैं जो आपका बैल उठा ले गया था।'' प्रांजल ने कहा।

सावन बेचैन सा हो उठा। उसने अपने चेहरे को ऐसा सिकोड़ा मानो वह उस घटना को याद कर रहा हो।

''ओह, उस घटना को हुए तो लगभग एक पखवाड़ा हो गया। मुझे याद है वह अंधियारी रात जब वर्षा हो रही थी। लगभग आधी रात को मैंने पिछवाड़े गौशाला में हल्की आवाज सुनी। मैं अपना चौड़े फन वाला चाकू दायें हाथ में लिए बाहर आया। जानते हो मैंने क्या देखा। एक बहुत बड़ा चीता। उसने बैल की गर्दन को मुंह में दबा रखा था और उसे घसीट कर ले जा रहा था।''

''तुम्हारे पास लालटेन तो रही होगी।'' राजवीर ने पूछा।

''नहीं। छोटी सी लालटेन, जिसका हम घर में इस्तेमाल करते हैं, इस प्रकार के मौसम में कोई काम की नहीं होती।''

''तुम्हें पक्का पता है वह चीता था।'' प्राजंल ने जानना चाहा, ''वह रायल बंगाल टाइगर भी हो सकता है।''

''नहीं वह चीता ही था। मुझे उसके शरीर पर धब्बे स्पष्ट दिखाई दिए थे।''

''फिर आपने क्या किया।''

''मैं क्या कर सकता था। सियार को तो मैं मार सकता हूं किन्तु चीतो से मैं नहीं लड़ सकता, छोटा साब, इसलिए मैं जोर जोर से आवाज देने लगा, एक टीन बजाया और बहुत हल्ला मचाया।''

"तुम्हें बैल का हाड़-मांस तो मिल गया होगा।"

"जी नहीं। मैंने उसे ढूंढने का प्रयास ही नहीं किया। मिलने से भी क्या होता। वह तो मर चुका था, खैर।"

"तुमने उसके पंजे के चिन्हों को ढूंढा था।" राजवीर ने पूछा।

"एक भी नहीं मिला। बरसात के पानी से सब धुल गए थे।"

वे लोग झोपड़ी के पीछे बनी गौशाला में गए। बच्चों ने चारों तरफ अच्छी तरह देखा।

"अजीब बात है।" राजवीर ने कहा। "मैं तो कोई जोरदार कहानी सुनना चाहता था कि आपने चीता कैसे पकड़ा किन्तु आप तो डर गए। कोई बात नहीं, धन्यवाद। नमस्ते।"

"छोटा साब।" सावन ने प्रांजल को पुकारते हुए कहा "कारखाने में जो चोरी हुई थी उसके बारे में आपके पिता ने कुछ कहा है।"

"ओह हां।" प्राजंल ने चेहरे पर कोई भाव लाए बिना कहा। "उन्हें आज सुबह पुलिस ने फोन किया था। डेका और बिरची दोनों ने चाय की चोरी करने का अपराध स्वीकार कर लिया है।"

"स्वीकार कर लिया है।" सावन ने आश्चर्य से कहा।

"हां। पुलिस ने मामले को यहीं समाप्त कर दिया है। पिता जी कल से फिर माल गोदाम का उपयोग करने लगेंगे क्योंकि चोर पकड़े जा चुके हैं। कारखाने में चाय की पेटियों का ढेर लग गया है और उन्हें माल गोदाम में भेजा जाना है।"

उन्होंने जाते जाते सावन के चेहरे पर खुशी चमकते हुए देखी जो एक कान से दूसरे कान तक फैल गई।

थोड़ी देर बाद मंगला उनसे जा मिला। "कुछ नतीजा निकला।" उसने पूछा।

"सावन निश्चित रूप से झूठ बोल रहा है।" राजवीर ने जवाब दिया। "उस रात घना अंधेरा था और बरसात हो रही थी, उसके पास कोई लालटेन नहीं थी, बरसात ने पंजे के निशान मिटा दिए थे फिर भी उसे विश्वास है कि उसने चीता देखा था। वह तो चीते के शरीर पर धब्बे देखने का भी दावा करता है।"

"हमने पिछवाड़े जा कर देखा" प्रांजल ने जोड़ा "घर के चारों ओर लगी बांस की बाड़ी बहुत पुरानी है किन्तु वह कहीं से भी नहीं टूटी है। एक भरापूरा बैल बहुत भारी भरकम जानवर

होता है और चीता भी उसको लेकर बाड़ी नहीं फांद सकता। अतः यदि चीता वहां सचमुच में गया होता तो बाड़ी कहीं से टूटी मिलती।"

"वह बैल के खो जाने पर भी खुश नजर आता था।" अलका ने बताया। "बैल बहुत कीमती होता है और बागान के मजदूर गरीब हैं"।

"बिल्कुल यही मैंने सोचा था" मंगला ने कहा। "सावन पर नजर रखने की आवश्यकता है।"

"हम भी यही योजना बना रहे हैं," प्रांजल ने कहा "मैंने उन्हें कुछ गलत सूचनाएं दे दी हैं। हम यहां आज रात फिर आएंगे और देखेंगे कि आज वह क्या करता है।"

अध्याय 9

रात करीब 11 बजे प्रांजल और राजवीर अपने बिस्तरों से खिसक गए और दबे पांव सीढ़ियां उतरे। बंगले से निकल कर जैसे ही वह टूल शेड की तरफ बढ़े उनके साथ उनका प्यारा कुत्ता टीपू भी आ मिला। रात्रि में उसे खोल दिया जाता था। प्राजंल ने अपनी टार्च दो बार जला कर इशारा कर दिया और सामने एक छाया उभरी। वह मंगला था। उसने फुसफुसाकर कहा, "जल्दी आओ, समय नहीं खोना चाहिए।"

तीनों बस्ती की तरफ बढ़ने लगे। घना अंधेरा था। बादलों से आकाश काला हो गया था। कभी कभी आंधी आने का संदेश लिए दूर कहीं बिजली चमक उठती थी।

बागान के रास्ते रात्रि में लगभग एक जैसे लगते हैं। यदि उनके साथ मंगला न होता तो वे भटक गए होते। मंगला कोई गलती किए बिना उन्हें बस्ती में सावन की झोपड़ी की तरफ ले चला।

अन्य झोपड़ियां तो अंधकार में डूबी हुई थीं किन्तु सावन की झोपड़ी में उजाला दिखाई दे रहा था। दीवार के किनारे चलते हुए लड़कों ने बांस की बनी खिड़की से अंदर झांका।

सावन अंदर था और वह कहीं जाने की तैयारी में था। उसने चौड़े फल वाला अपना दाव उठाया और लैंप बुझा दिया। धीरे से बिना आवाज किए दरवाजा बंद किया और बाहर निकल गया।

लड़के और अंधेरे में खिसक गए। एक मिनट के लिए सावन रुका और आसपास की टोह लेता रहा कि उसके जाने को कोई देख तो नहीं रहा है। फिर वह तेजी से कदम बढ़ाते हुए चलने लगा।
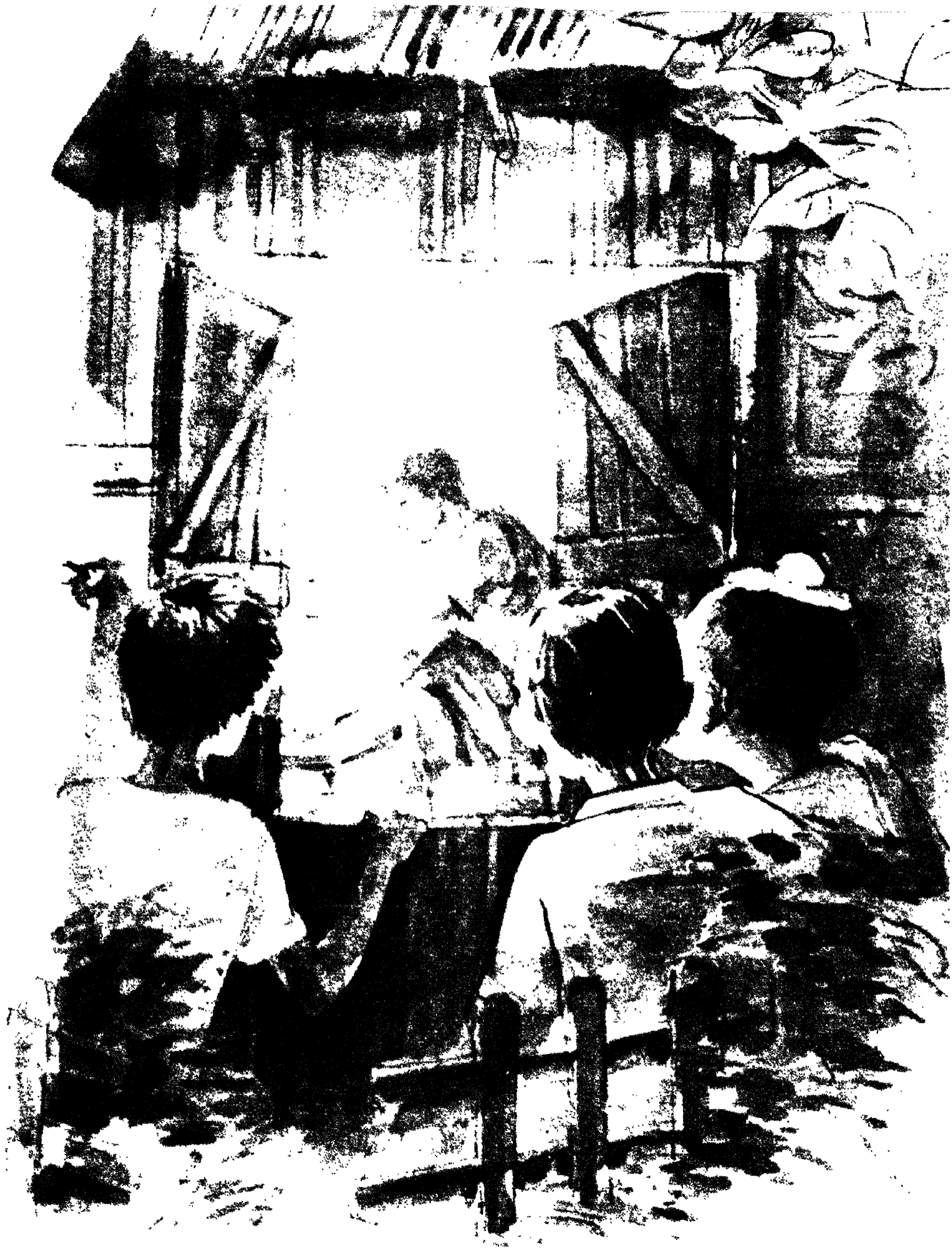
लड़कों ने उससे कुछ दूर रह कर उसका पीछा किया।

एकाएक राजवीर का दिल बहुत जोरों से धड़कने लगा। बिना चेतावनी दिए, उनके पास एक लंबी और ऊंची आवाज में कोई जानवर चिल्लाया।

"क्या है ये।" राजवीर की आवाज में डर समाया हुआ था।

"सियार"। मंगला ने फुसफुसाकर कहा। "यदि एक सियार हुआ-हुआ बोलने लगता है तो बाकी सारे सियार भी उसके साथ कोरस गाने लगते हैं।"

प्रांजल के पेट में भी डर और उत्तेजना से ऐंठन शुरू हो गई। घने अंधेरे, बासं के तनों से टकराती हुई हवा की खड़खड़, सियारों की रोमांचकारी आवाज से घबराहट फैल रही थी। उसने आश्चर्य किया कि ऐसे समय में वहां चीता क्यों नहीं है।

सावन अब पक्की सड़क पर चल रहा था जहां प्रत्येक रविवार को छोटा सा साप्ताहिक बाजार लगता था। वहां पक्के मकानों की एक छोटी सी कतार थी जिसका उपयोग दूकानदार अपने रहने के अलावा दूकान के लिए भी करते थे। सावन एक मकान के सामने रुका और उसने दरवाजा खटखटाया।

दूसरी तरफ से भी जवाब मिला फिर दरवाजा खुलने की आवाज आई और किसी ने सावन को अंदर बुला लिया। उसके अंदर जाने के बाद दरवाजा फिर बंद हो गया और सिटकनी चढ़ा दी गई।

मकान के बगल से एक सकंरी खाई सी थी। वहां एक छोटा सा गंदा नाला था जिससे तीखी गंध आ रही थी। यह नाला पड़ोस की दुकान को इस मकान से अलग करता था। लड़कों ने उसे पार किया। दुगंध से उनकी नाक फट रही थी। वे एक के पीछे एक होकर दबे पांव अधखुली खिड़की की ओर बढ़ने लगे। मंगला ने सतर्क होकर अंदर झांका और फिर राजवीर और प्रांजल को भी कमरे की झलक दिखाने के लिए खिड़की से हट गया।

एक पलंग पर पांच आदमी पालथी मारे बैठे हुए ताश खेल रहे थे। सावन एक लंबे ऊंचे कद्दावर तगड़े व्यक्ति से बात कर रहा था, वही उनका लीडर मालूम पड़ता था।

"मैदान खाली है" सावन कह रहा था। "डेका और बिरची ने अपराध स्वीकार कर लिया है। भगवान जाने उन्होंने ऐसा क्यों किया।"

"कोई भी बता सकता है" तगड़े व्यक्ति ने कहा। "पुलिस की मार के डर से उन्होंने ऐसा

किया है। न्यायालय पहुंचते ही वे अपने बयान से मुकर जाएंगे।''

मैनेजर कल से माल गोदाम का उपयोग करने की योजना बना रहा है। कारखाने में चाय का ढेर खड़ा हो गया है और उसे वहां से हटाना जरूरी हो गया है। उसे इस बात का गुमान भी नहीं है कि पुलिस ने गलत आदमियों को गिरफ़्तार किया है।''

''चाय की पत्ती किस क्वालिटी की होगी'' गेंग लीडर ने पूछा।

''हमारे बागान की सबसे अच्छी चाय है। उसके बाजार में अच्छे दाम मिलेंगे।''

लीडर का चेहरा खुशी से चमक उठा ''तब तो हम कल रात को ही छापा मारेंगे।''

अन्य लोग आश्चर्य से उसकी तरफ देखने लगे। वे इसका विरोध करने के लिए उतावले थे।

''हमें अपनी किस्मत उतनी दूर तक नहीं आजमानी चाहिए'' एक ने कहा।

''इतनी जल्दी दूसरा छापा डालना जोखिम में पड़ना होगा'' दूसरे ने टिप्पणी की।

''बिल्कुल नहीं'' लीडर ने आश्वासन दिया। ''हमारा काम पक्का है। हमें उनके आश्चर्य का लाभ भी तो है। कोई भी इतनी जल्दी दूसरे छापे की आशा भी नहीं करेगा। क्योंकि लोग जानते हैं कि चोर तो पकड़े जा चुके हैं। हमें तो जिस सफलता से पहला काम किया था वैसा ही यह भी करना है।''

''किन्तु पुलिस एकदम समझ जाएगी कि डेका और बिरची असली अपराधी नहीं हैं,'' सावन ने संकेत किया।

''इससे क्या होता है। उन्हें अभी या बाद में पता लगना ही है। इस दूसरे छापे से हम सबको एक बड़ी रकम भी तो मिलेगी।''

धन लिप्सा की चमक अब उनके चेहरों पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। लीडर को अब उन्हें मनाने में कोई कठिनाई नजर नहीं आ रही थी।

लड़के थोड़ी देर और कान लगाए रहे और फिर वहां से हट कर पक्की सड़क पर आ गए।

''मैं लीडर को पहचानता हूं,'' मंगला ने कहा ''वह इस दुकान का मालिक है। अन्य लोग अपरिचित हैं।''

''हम जितना कर सकते थे, हमने कर कर लिया'' प्रांजल ने कहा। ''अब आगे का काम पुलिस का है।''

मंगला उन्हें सुरक्षित रूप से बंगले में जाते देखता रहा फिर उसने उन्हें हाथ हिला कर विदा किया और फिर अंधेरे में खो गया।

अध्याय 10

अगली सुबह नीलकंठ पक्षियों की चहचहाट के तीखे स्वर से बड़े तड़के ही बच्चों की नींद खुल गई। वे कपड़े बदलने में अपना समय गवाएं बिना सीधे मि. बरुआ के कमरे की ओर भागे।

मि. बरुआ बच्चों के मुख से माल गोदाम में सुरंग तथा नदी में नाव पाए जाने और सावन की दुकानदार और उसके चोरों के गेंग के साथ सांठगांठ होने के बारे में बहुत गंभीर होकर बातें सुन रहे थे।

मि. बरुआ ने पुलिस को फोन किया। थोड़ी ही देर में कोतोकी उनके पास आ गया। जैसे ही बच्चों ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की, कोतोकी ने पहले तो उन्हें झिड़क दिया किन्तु जैसे जैसे कहानी से रहस्य खुलने लगा उसका चेहरा उत्तेजना और रोमांच से लाल होने लगा।

अंततः उसे अपने पहले के रूखे व्यवहार के लिए माफी मांगनी पड़ी। ''तुम बच्चों ने बहुत बढ़िया काम किया'' उसने स्वीकार किया, ''अब हमें गेंग को पकड़ लेना चाहिए। जब वे रात को चोरी करने आएंगे हम घेरा डाल देंगे।''

मि. बरुआ बागान का नक्शा ले आए। सिपाहियों के घात लगाने के लिए प्रमुख स्थान स्पष्ट रूप से सुरंग का मुंह और नाव थे।

''हम इन स्थानों पर बड़ी संख्या में पुलिस तैनात करेंगे। वे चाय की झाड़ियों में छिप जाएंगे। मैं स्वयं माल गोदाम के अंदर से सारी कार्यवाई का निदेश करूंगा।'' कोतोकी ने कहा।

''वो पेटियां भारी हैं'' मि. बरुआ ने मत व्यक्त किया ''वहां से नदी काफी दूर है। मैं उतनी दूर तक उन पेटियों को ले जाए जाने के बारे में सोच ही नहीं सकता।''

"यह तर्क संगत है" कोतोकी सहमत होते हुए बोला "इसलिए उनके पास ट्रांसपोर्ट भी होगा। वह मोटर गाड़ी तो नहीं होगी किन्तु ऐसी गाड़ी अवश्य होगी जिससे आवाज नहीं होती।"

"आपके पुलिस वालों की सहायता के लिए क्या मैं अपने आदमी भी दूं" मि. बरुआ ने पूछा।

"यह ठीक नहीं होगा" कोतोकी ने जबाब दिया। "रात्रि में अधिक लोग होने से मामला गड़बड़ा सकता है। मेरे पुलिस वाले प्रशिक्षित हैं और उनके पास हथियार भी होंगे। हां, मैं ध्यान रखूंगा कि वे वर्दी में न हों।"

"क्या यह आवश्यक है।" राजवीर ने जानना चाहा, "रात इतनी अंधेरी होगी की ये कौन देख पाएगा कि वे क्या पहने हैं।"

"जो योजना मेरे दिमाग में है, उसके अनुसार उन्हें सादे कपड़ों में ही होना चाहिए। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि नदी के दूसरे किनारे पर ट्रक खड़ा होगा और यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसके पहले चाय की पेटियों की चोरी हुई है। अतः अब हमें यही करना है. ......"

रात अंधेरी और निःस्तब्ध थी। हवा भी नहीं बह रही थी। आकाश में छाए बादलों ने चांद और सितारों को ढक रखा था। गहरी छाया के पीछे बैठे हथियार बंद पुलिस वाले चुपचाप संकेत का इंतजार कर रहे थे, उत्तेजना से उनके चेहरे तने हुए थे।

माल गोदाम के अंदर कोतोकी और तीन अन्य पुलिस वाले चाय की पेटियों के पीछे छिपे बैठे थे। उनके रिवाल्वर गोलियों से भरे हुए थे।

मि. बरुआ के पास राइफल थी। वह एक पेड़ की छाया के पीछे खड़े हो गए। यह आड़ उन्होंने सुरंग के प्रवेश के नजदीक ली थी। राजवीर, प्रांजल, अलका और मंगला भी मि. बरुआ के नजदीक खिसक आए। उनके दिल उत्तेजना से धड़क रहे थे, टीपू भी उनके पैरों के पास ऐसे आकर बैठ गया मानो वह एक छाया मात्र हो।

उन्होंने नमक और सीट्रोनेल्ला तेल के घोल को अपने शरीर में मल लिया था जिससे कि मच्छरों और जोंक को अपने से दूर रखा जा सके। मच्छरों का एक दल क्रोधित हो उनके सिर पर मंडरा रहा था, अन्यथा वहां बिल्कुल शांति थी।

एकाएक टीपू के शरीर में हरकत हुई और वह धीमी आवाज में गुर्राने लगा।

हर कोई सावधान हो गया और उनकी आंखें तेजी से अंधेरे को भेदने लगीं। उन्हें

चूं-चरमराहट की आवाज सुनायी पड़ने लगी और जैसे जैसे वह आवाज नजदीक आने लगी उन्हें एक बैलगाड़ी की छाया नजर आने लगी।

"सावन का बैल।" मगला ने उपहास करते हुए धीमें स्वर में कहा। "वही जिसे चीता उठा ले गया था।"

बैलगाड़ी सुरंग के मुंह के पास आकर रुक गई। चार व्यक्ति उसमें से कूद पड़े और बड़ी लापरवाही से उन्होंने बांस के ढक्कन को उठा कर अलग फेंक दिया। उनमें से तीन व्यक्ति घुटनों के बल सुरंग में घुस गए। चौथा बाहर खड़ा इंतजार करने लगा।

बैलगाड़ी में किसी ने माचिस जलाई। गाड़ीवान ने अपनी बीड़ी जलाई थी। माचिस की ज्वाला में एक भद्दा चेचक के दाग वाला चेहरा दिखाई दिया। वह सावन था।

बीस मिनट बाद चाय की पहली पेटी सुरंग के प्रवेश स्थल पर दिखाई दी। पेटी बाहर खड़े व्यक्ति ने पकड़ ली और सावन की मदद से उसे बैलगाड़ी में लाद दिया।

झाड़ियों के बीच में छिपे हुए पुलिस वालों में से एक ने धीरे से आगे बढ़ने की आवाज दी और सभी तरफ से पुलिस वाले धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। उन्होंने अपनी राइफलें साध ली थीं। सावन और दूसरा व्यक्ति विस्मय से भर उठे जब उन्होंने अपने को चारों तरफ घिरा पाया। अंधेरे में हथकड़ी के क्लिक होने की आवाज सुनाई दी।

माल गोदाम में, कोतोकी और उसके आदमियों ने चोर को चाय की दूसरी पेटी उठाते समय ही दबोचना चाहा। वह गेंग लीडर था। उस आदमी में गजब की फुर्ती थी। उसने तेजी से चाय की पेटी नीचे गिरा दी और छलांग लगा कर जमीन पर लेट गया। उसका हाथ अपनी कमर में बंधे रिवाल्वर को ढूंढने के लिए आगे बढ़ा तभी कोतोकी की राइफल गूंज उठी। आदमी तड़प कर उछल गया, गोली उसके दाहिने कंधे के ठीक नीचे लगी थी।

राइफल की आवाज से सावधान होकर सुरंग में घुसे दोनों व्यक्ति तेजी से घुटनों के बल खिसकते हुए मुंह वाले छोर की ओर चले। वहां उनकी आगवानी के लिए पुलिस वाले इंतजार कर रहे थे।

बैलगाड़ी के पास पकड़े गए चारों बंदियों को माल गोदाम ले जाया गया। मि. बरुआ और बच्चे पुलिस वालों की सुरक्षा में उनके पीछे चल रहे थे।

''माल बढ़िया है, मि. बरुआ'' हंसते हुए कोतोकी ने कहा, ''नाव में इंतजार कर रहे उनके साथी किसी भी समय यहां आ सकते हैं।''

कैदियों ने रुखाई से और बिना कोई पश्चाताप किए उसकी ओर घूरा।

मि. बरुआ ने बागान के डाक्टर को घायल गेंग लीडर की चिकित्सा करने के लिए बुलवाया। गोली आर-पार निकल गई थी किन्तु किसी अंग के खास भाग का नुकसान नहीं हुआ था। जब डाक्टर मरहमपट्टी कर रहा था उसी समय पुलिस वाला नाव वाले को धकेलता हुआ माल गोदाम में पहुंचा।

''यह तो भाग ही निकला था सर'' उसने बताया। ''यदि मैं इसे नदी में से खींच कर नहीं निकालता। पानी का सांप है यह सर।''

उन्होंने जो योजना बनाई थी वह बिना किसी बाधा के बहुत जल्द कामयाब हुई। दो घंटे

का समय व्यतीत कर दिए जाने के पश्चात् जिससे कि चोरों को किसी प्रकार का संदेह न हो, पुलिस वालों से भरी एक नाव जिसमें आगे कोतोकी बैठा हुआ था और उनको जगह बताने के लिए नाव वाला और गेंग लीडर भी बैठा हुआ था, नदी के दूसरी तरफ बढ़ चली।

वहां एक ट्रक के पास खड़े तीन व्यक्ति चाय की पेटियों का इंतजार कर रहे थे। किन्तु यह क्या। नाव तो उनके लिए प्राणघातक बन गई। उसमें चाय की पेटियों के स्थान पर सादे कपड़े पहने पुलिस वाले बैठे हुए थे। तीनों ने किसी प्रकार का विरोध किए बिना पुलिस के आगे समर्पण कर दिया।

बाद में उस रात पुलिस ने गेंग लीडर द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर शहर के बाहर बने एक माल गोदाम पर छापा मारा और वहां से चाय की पेटियां बरामद कर लीं जो पहले चोरी की गई थीं।

अगले दिन शाम होने तक गायब हो गई पेटियों का राज पूरी तरह से खुल चुका था।

जुगनु आफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित।